डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

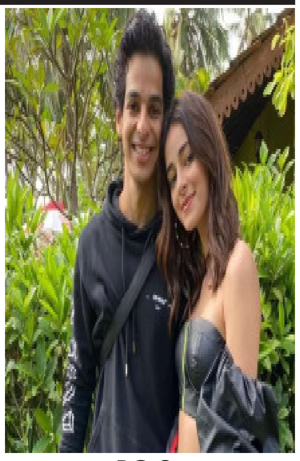

PG-8

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाः सिंगल नहीं हैं अन्नया पांडे रूमर्ड बॉयफ्रेंड इशान खट्टर को.....

वर्ष -08 अंक -05 | प्रयागराज, शुक्रवार 04 मार्च, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन से की फोन पर बात, खार्किव में फंसे भारतीय छात्रों को लेकर हुई विशेष चर्चा

नई दिल्ली। यूक्रेन संकट के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बात की है। दोनों शीर्ष नेताओं ने यूक्रेन की स्थिति की समीक्षा की विशेष रूप से खार्किव में जहां कई भारतीय छात्र फंसे हुए हैं। पीएम मोदी ने संघर्ष क्षेत्रों से भारतीय नागरिकों की सुरक्षित निकासी पर भी चर्चा की है। यूक्रेन पर रूसी सेना के हमले के बाद से यह पीएम मोदी और पुतिन के बीच दूसरी टेलीफोन पर बातचीत है। पीएम मोदी ने आक्रमण के अगले दिन 25 फरवरी को आखिरी बार रूसी राष्ट्रपति से बात की थी, जिसमें उन्होंने 'हिंसा की तत्काल समाप्ति' का आह्वान किया था। आज टेलीफोन पर बातचीत खार्किव में यूक्रेनी और रूसी सेनाओं के बीच भयंकर लड़ाई के बीच हुई है। आधिकारिक अनुमान के मुताबिक करीब 4,000 भारतीय नागरिक यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर और पूर्वी यूक्रेन के कुछ हिस्सों में फंसे हुए हैं। बुधवार को यूक्रेन में भारतीय दूतावास ने सभी भारतीय नागरिकों को तुरंत अपनी सुरक्षा के लिए खार्किव छोड़ने के लिए एक एडवाएजरी जारी की है।

देश के इन हिस्सों में कल से शुरू होगी तेज बारिश, IMD ने जारी किया अलर्ट

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई अन्य राज्यों के मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। दिल्ली में हल्की बारिश और दक्षिण भारत के कई हिस्सों में तेज बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी) आइएमडी ने अपने ताजा बुलेटिन में कहा कि यह अगले 24 घंटों के दौरान एक अच्छी तरह से चिह्नित दबाव का क्षेत्र बनने और बाद के 24 घंटों के दौरान एक अवसाद में केंद्रित होने की संभावना है। यह अगले 24 घंटों के दौरान पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की ओर श्रीलंकाई तट की ओर और उत्तर तमिल की ओर बढ़ने की आशंका है।ने बुधवार को तमिलनाडु और आसपास के इलाकों में भारी बारिश का अनुमान जताया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच इंडियन एयरफोर्स दिखाएगी 'वायु शक्ति' पोखरण में ७ मार्च को होगा युद्धाभ्यास

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध अभी भी जारी है। युद्ध के बीच भारतीय वायुसेना भी अपना दम दिखाने को तैयार है। दरअसल, वायुसेना पोखरण फायरिंग रेंज में सात मार्च को युद्धाभ्यास करेगी। युद्धाभ्यास के दौरान वायुसेना अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करेगी। इस कार्यक्रम को 'वायु शक्ति' नाम दिया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। राफेल समेत 150 विमान 'वायु शक्ति' अभ्यास में शामिल होंगे और आकाश में अपने युद्ध कौशल का प्रदर्शन करेंगे। इससे पहले साल 2019 में वायुसेना ने ये अभ्यास किया था। भारतीय वायुसेना तीन साल में एक बार अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करती है। इसमें हेलीकाप्टर, लड़ाकू विमान, परिवहन और सपोर्ट सिस्टम शामिल होते हैं। इस बार 150 विमानों में से राफेल समेत 109 लड़ाकू विमान इस अभ्यास में हिस्सा लेने वाले हैं। वायुसेना ने इस अभ्यास की तैयारी पूरी कर ली है। वाइस चीफ मार्शल संदीप सिंह ने बताया कि अभ्यास

में जगुआर, राफेल, सुखोई-30, मिग-29, हल्के लड़ाकू विमान तेजस, मिग-21 बाइसन, हॉक 32, एम200 समेत लड़ाकू विमान शामिल होंगे। उन्होंने आगे कहा कि ग्लोबमास्टर सी-17, सी-130 जे हरक्यूलिस, चिनोक, एमआई 17 वी5, एमआई 35 और अपाचे जैसे अन्य विमान भी अभ्यास में भाग लेंगे। आकाश मिसाइल सिस्टम और स्पाइडर मिसाइल सिस्टम की क्षमताओं का भी प्रदर्शन किया जाएगा। भारतीय वायुसेना ने नई दिल्ली में तिलपत रेंज में 21 जुलाई 1953 को इस तरह का पहला अभ्यास किया था। तिलपत रेंज में 18 मार्च 1989 को अंतिम अभ्यास हुआ था।

फिर घटे कोरोना वायरस के मामले, बीते 24 घंटे में 6561 नए केस दर्ज 142 लोगों की मौत

नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण को लेकर अपडेट जारी हुआ है। अपडेट के मुताबिक, देशभर में कोरोना के मामलों में आज गिरावट देखने को मिली है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि बीते 24 घंटे में कोरोना के 6,561 नए मामले सामने आए हैं। वहीं, इससे पहले बुधवार को कोरोना के 7,554 मामले दर्ज किए गए थे। कोरोना के नए मामलों के साथ ही मृतकों की संख्या में भी कमी देखी गई है। कोरोना से बीते 24 घंटे में 142 लोगों की मौत हुई है। वहीं, बुधवार को 223 लोगों की जान गई थी। इस दौरान कोरोना से 14,947 मरीज ठीक भी हुए हैं। देश में कोरोना के एक्टिव केस भी तेजी से कम हो रहे हैं। सक्रिय मामले घटकर अब 77,152 हो गए हैं।

बता दें कि कोरोना के अब तक देश में 4,29,45,160 मामले सामने आ चुके हैं। कुल 4,23,53,620 लोग इससे ठीक हो चुके हैं। वहीं, कुल मौतें 5,14,388 हुई हैं।

यूक्रेन में फंसे 183 भारतीयों को लेकर बुखारेस्ट से मुंबई पहुंचा एयर इंडिया का विशेष विमान केंद्रीय मंत्री ने किया स्वागत

मुंबई। यूक्रेन में फंसे भारतीयों को लगातार सुरक्षित निकाला जा रहा है। इसी बीच यूक्रेन में फंसे 183 भारतीयों को लेकर विशेष विमान बुडापेस्ट से गुरुवार को मुंबई पहुंचा। अधिकारी ने

जानकारी देते हुए बताया बुडापेस्ट से मुंबई पहुंची फ्लाइट में एक शिशु भी शामिल था। दरअसल, गुरुवार को बुडापेस्ट से विशेष विमान मुंबई पहुंचा। इस दौरान केंद्रीय मंत्री रावसाहेब दानवे ने फ्लाइट में सवार यात्रियों का स्वागत किया। एयर इंडिया एक्सप्रेस की विशेष फ्लाइट 1202 सुबह लगभग 5.30 बजे मुंबई में लैंड हुई। केंद्रीय मंत्री रावसाहेब दानवे ने कहा कि मुझे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आपका स्वागत करने के लिए भेजा है। उन्होंने बताया कि छात्रों सहित लगभग 17,000 भारतीय यूक्रेन में फंसे हुए हैं, पीएम ने उन्हें निकालने के लिए आपरेशन गंगा शुरू किया है। मंत्री ने कहा कि अब तक लगभग चार से पांच हजार भारतीयों को स्वदेश लाया जा चुका है और वहां फंसे लोगों को देश वापस लाने के लिए अभियान जारी रहेगा। आपको बता दें कि यूक्रेन से 182 भारतीयों को लेकर एयर इंडिया का एक विशेष विमान मंगलवार सुबह रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट से मुंबई पहुंचा था। 27 फरवरी के बाद से युद्ध प्रभावित यूक्रेन से भारतीयों को वापस लाने के लिए बुखारेस्ट से मुंबई के लिए संचालित यह दूसरी निकासी उड़ान थी।

पासपोर्ट खो जाने के बावजूद पीएमओ ने सुनिश्चित की अमनजोत की वापसी, दो घंटे में जारी हुआ इमरजेंसी सर्टिफिकेट

नई दिल्ली। युद्ध क्षेत्र की तमाम चुनौतियों के बीच सरकार छात्रों की सुरक्षित घर वापसी सुनिश्चित करने में जुटी है। नए नए बार्डर ढूंढने के अलावा छात्रों की व्यक्तिगत परेशानियों को हल

करने में भी पीएमओ और विदेश मंत्रालय के अधिकारी जुटे हैं। खार्कीव के मेडिकल कालेज में पढ़ने वाली अमनजोत नाम की एक छात्रा का पासपोर्ट खो जाने की जानकारी मिलने के तत्काल बाद पीएमओ हरकत में आया और दो घंटे के भीतर छात्रा को इमरजेंसी सर्टिफिकेट उपलब्ध कराया गया। दैनिक जागरण से बात होने तक वह पोलैंड की सीमा से लगभग एक घंटे की दूरी पर थी। दरअसल खार्कीव में रूस के बढ़ते हमले के बीच यूक्रेन स्थित भारतीय दूतावास ने छात्रों को तत्काल शहर छोड़ने का निर्देश जारी कर दिया। इसके बाद भारतीय छात्र हर संभव साधन से खार्कीव से निकलने लगे। लेकिन इस अफरातफरी में अमनजोत का पासपोर्ट कहीं गुम हो गया। गनीमत सिर्फ इतनी थी कि उसने मोबाइल में पासपोर्ट की फोटो खींच रखी थी। उसने अपनी समस्या को भारत स्थिति कुछ लोगों से साझा की और लखनऊ के एक होटल इंडस्ट्री में काम करने वाले विजय मिश्रा ने दिल्ली में अपने संपर्क के जरिए प्रधानमंत्री के सलाहकार अमित खरे और विदेश मंत्री जयशंकर से मदद का आग्रह किया। बताते हैं कि खरे ने तत्काल विदेश मंत्रालय को आगाह किया। तत्काल अमनजोत से संपर्क किया गया और पासपोर्ट के फोटो के आधार पर भारतीय दूतावास ने उसके लिए इमरजेंसी सर्टिफिकेट जारी कर दिया। इस सर्टिफिकेट की मदद से अमनजोत के लिए पोलैंड से भारत की उड़ान भरना अब संभव होगा। पोलैंड में भारतीय छात्रों के ठहरने और खाने-पीने का इंतजाम किया गया है।

आपरेशन गंगा के तहत कुल 3500 से अधिक भारतीयों की हुई घर वापसी, 17000 भारतीयों ने छोड़ा यूक्रेन

नई दिल्ली। रूसी हमले के बाद से यूक्रेन में हालात बिगड़ते जा रहें हैं। इस बीच यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को बाहर निकालने के लिए भारत द्वारा एक अभियान आपरेशन गंगा चलाया जा रहा है। इसके तहत पिछले 24 घंटों में भारत के लिए छह उड़ानें रवाना हुई हैं। भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस आपरेशन के तहत भारतीयों को जमीनी सीमा चौकियों के जरिए यूक्रेन से निकलने के बाद रोमानिया, पोलैंड, हंगरी और स्लोवाकिया से हवाई रास्ते से स्वदेश लाया जा रहा है। बता दें कि अब तक कुल 3500 से अधिक नागरिकों को वापस लाया जा चुका है। हालांकि एडवाइजरी जारी होने के बाद से 17000 भारतीयों ने यूक्रेन की धरती छोड़ दी है। सरकार द्वारा मिली जानकारी के अनुसार विदेश मंत्रालय की ओर से जारी एडवाइजरी के बाद से कुल 17,000 भारतीय नागरिक यूक्रेन छोड़ चुके हैं। बता दें कि अब तक 3500 से अधिक भारतीयों को यूक्रेन से वापस भारत लाया जा चुका है और अब केवल 3000 के करीब छात्र यूक्रेन में फंसे हुए हैं। उधर सरकार का कहना है कि उसने 1 से 3 मार्च तक 26 फ्लाइट चलाने की योजना बनाई हुई है जिसके तहत कुल 5500 भारतीयों को स्वदेश वापस लाया जाएगा यूक्रेन में फंसे भारतीयों

को वतन वापस लाने में जुटीं भारत सरकार द्वारा हर कोशिश की जा रही है। इसी के मद्देनजर आज सुबह 200 भारतीय नागरिक भारतीय वायुसेना के सी-17 विमान से वतन वापस लोटे हैं। बता दें कि यह विमान बुधवार सुबह 4 बजे ही हिंडन एयरबेस से रोमानिया के लिए रवाना हुआ था। इधर इंडियन एयर फोर्स ने भी इस अभियान का मोर्चा संभाल लिया है। आइएएफ ने अब तक 4 उड़ानें यूक्रेन से लोगों को वापस लाने के लिए शुरू की हैं। दूसरी ओर इंडिगो 20 उड़ानें संचालित कर रहा है और इन 20 उड़ानों में से छह उड़ानें 1300 से अधिक भारतीय नागरिकों को वापस ला चुकीं हैं। भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए आज कुल आठ अतिरिक्त उड़ानें उड़ान भरेंगी। बता दें कि एयरलाइन इन उड़ानों को सभी सुरक्षा नियमों के तहत ए321 विमानों पर संचालित कर रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा, क्या हम विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में भी दखल दे सकते हैं

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को कोरोना वैक्सीन के टेस्टिंग से जुड़े आकड़ों की मांग वाली याचिका पर सुनवाई की गई। कोर्ट ने जानना चाहा कि क्या वह कोरोना रोधी वैक्सीन के क्लीनिकल परीक्षण के मुद्दे में दखल दे सकता है, क्योंकि यह विशेषज्ञों का क्षेत्र है। जस्टिस एल नागेश्वर राव और जस्टिस बीआर गवई की खंडपीठ ने कहा कि वैक्सीनेशन से संबंधित फैसला विशेषज्ञों द्वारा दिए गए आंकड़ों के आधार पर लिया गया है। पीठ ने कहा, 'क्या हम विशेषज्ञता वाले क्षेत्र में दखल दे सकते हैं भारत सरकार ने कुछ डाटा के आधार पर फैसला लिया है। क्या हम विशेषज्ञों की रिपोर्ट की प्रमाणिकता के बारे में दखल दे सकते हैं शीर्ष न्यायालय की यह टिप्पणी याचिकाकर्ता डा. जैकब पुलियल की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण की दलीलों के जवाब में आई। याचिकाकर्ता ने कोरोना रोधी टीकों के क्लीनिकल परीक्षण से संबंधित डाटा के खुलासे की मांग की है। डा. पुलियल टीकाकरण को लेकर राष्ट्रीय तकनीकी परामर्श समूह के पूर्व सदस्य हैं। पीठ ने कहा, 'विज्ञान मंतव्यों से जुड़ा मामला है। क्या हम उस क्षेत्र में दखल दे

सकते हैं जिसे हम नहीं समझते हैं अलग-अलग मंतव्य हो सकते हैं। हम विशेषज्ञ नहीं हैं। हमें इसकी गहराई में जाने को न कहें।' मामले की सुनवाई अधूरी रही। अब इस मामले में आठ मार्च को सुनवाई होगी। भूषण ने अपनी दलील में कहा कि टीका लेना या नहीं लेना यह व्यक्तिगत निर्णय है और सहमति के बिना अनिवार्य टीकाकरण असंवैधानिक था।

निजी मेडिकल कालेजों में 50 प्रतिशत सीट के लिए सरकारी फीस अगले सत्र से, जारी हुए नए दिशानिर्देश

नई दिल्ली। निजी मेडिकल कालेजों और डीम्ड यूनिवर्सिटी में 50 प्रतिशत सीटों के लिए सरकारी फीस की व्यवस्था अगले शैक्षणिक सत्र से लागू होगी। इस संबंध में नेशनल मेडिकल कमीशन

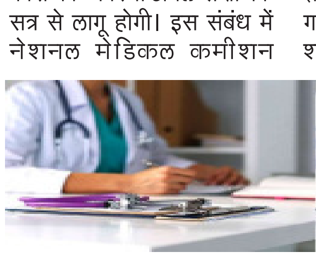

(एनएमसी) ने नए दिशानिर्देश जारी किए हैं, जिसमें कहा गया है कि संबंधित राज्यों में सरकारी मेडिकल कालेजों में जो फीस होगी उसी के बराबर इन 50 प्रतिशत सीटों के लिए भी फीस होगी। सूत्रों ने बताया कि एनएमसी के दिशानिर्देशों को प्रत्येक राज्य की फीस निर्धारण समिति द्वारा अपने-अपने मेडिकल कालेजों के लिए अनिवार्य रूप से लागू करना होगा। एनएमसी ने तीन फरवरी को एक ज्ञापन जारी किया था। इसमें कहा गया था कि सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सरकारी मेडिकल कालेज में जो फीस होगी उसी के बराबर फीस वहां के निजी मेडिकल कालेजों और डीम्ड यूनिवर्सिटी में 50 प्रतिशत सीटों के लिए होगी। इसमें कहा गया था कि जो छात्र सरकारी कोटा का उपयोग करेंगे सबसे पहले उन्हें इस फीस व्यवस्था का लाभ दिया जाएगा। अगर सरकारी कोटा वाले छात्रों की संख्या संबंधित मेडिकल कालेज में स्वीकृत कुल सीट के 50 प्रतिशत से कम होगी तो शेष सीट पर दाखिला लेने वाले दूसरे छात्रों को भी सरकारी मेडिकल कालेज के बराबर ही फीस भरनी होगी।

कारिडोर बनाकर खार्कीव से भारतीयों को निकालेगी रूसी सेना, रूस का आश्वासन

नई दिल्ली। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को यूक्रेन के युद्धग्रस्त इलाके खार्कीव में फंसे सैकड़ों भारतीय छात्रों को निकालने में मदद करने का आश्वासन दिया है। खार्कीव की स्थिति खराब होने की सूचनाओं के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार देर रात राष्ट्रपति पुतिन से बात की और भारतीय छात्रों को सुरक्षित निकालने का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। मोदी-पुतिन वार्ता के बारे में भारत सरकार की तरफ से संक्षिप्त जानकारी दी गई, लेकिन रूस सरकार की तरफ से इस बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसमें यूक्रेन पर आरोप लगाया गया है कि उसकी सेना भारतीय छात्रों को ह्यूमन शील्ड (मानव ढाल) के तौर पर इस्तेमाल कर रही है। रूसी सेना एक कोरिडोर बनाकर उन्हें सुरक्षित निकालने का इंतजाम कर रही है। इससे पहले दिन में भारत में रूस के नए राजदूत डेनिस अलीपोव और विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने खार्कीव

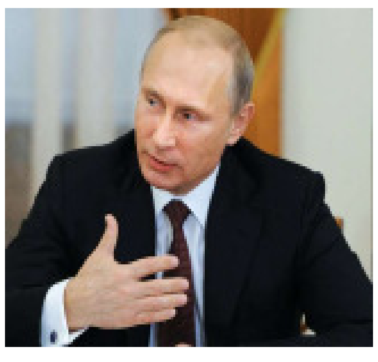

से भारतीय छात्रों को निकालकर रूस ले जाने के बारे दोनों देशों के बीच हो रही बातचीत का संकेत दिया था। प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति पुतिन के बीच तीन दिनों के भीतर यह दूसरी बातचीत है। क्रेमलिन की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि पुतिन ने प्रधानमंत्री मोदी को बताया कि रूसी पक्ष खार्कीव से भारतीय छात्रों को एक कारिडोर से निकालने की कोशिश कर रही है ताकि उन्हें सबसे नजदीकी रूसी इलाके में ले जाया जा सके। यह भी कहा गया है कि रूसी सेना वह सब कर रही है जिससे भारतीय नागरिकों को युद्धभूमि से सुरक्षित बाहर निकाला जा सके। इसमें आगे कहा गया है कि भारतीय छात्रों को यूक्रेन के सुरक्षा बलों ने अगवा कर लिया है और उनका इस्तेमाल ह्यूमन शील्ड की तरह किया जा रहा है। रूस का यह भी आरोप है कि यूक्रेन की सेना भारतीय छात्रों को बाहर जाने से रोक रही है। रूस के आरोप पर भारत की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में छात्रों का हंगामा, तोड़फोड़ बंद करा दीं कक्षाएं पुलिस ने भांजी लाठी, कई घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पिछले कई दिनों से चल रहा छात्रों का आंदोलन गुरुवार को और भी उग्र हो गया है। ऑफलाइन परीक्षा का विरोध कर रहे छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रशासन की अनदेखी पर आक्रोश जताते हुए दिन में करीब 11 बजे नारेबाजी शुरू की और फिर सभी कक्षाओं में जाकर शिक्षण बंद करा दिया।कई विभाग में तोड़फोड़ भी कर दी गई। डीएसडब्लू कार्यालय पर भी घेराव कर जबरदस्त नारे लगाए गए। खबर पाकर पहुंची पुलिस बल ने छात्रों को लाठी पटक कर दौड़ाया।पुलिस की लाठी से कई छात्र जख्मी हो गए। घायल छात्रों को अस्पताल ले जाया गया। छात्र तितर-बितर होकर हमलावर रूख में हैं। पुलिस बल के लाठी चार्ज के बीच आंदोलित छात्रों का कहना है कि ऑफलाइन परीक्षा की बजाय ऑनलाइन परीक्षा का ऐलान हो तभी उनका आंदोलन खत्म होगा वरना वे शांत नहीं बैठने वाले हैं।उल्लेखनीय है कि बुधवार को भी छात्रों ने इवि के सभी गेट में ताला लगा दिया था। उस वक्त कुलपति तो बाहर थीं लेकिन बाकी तमाम अधिकारी और प्रोफेसर परिसर में मौजूद थे।

हर पल था मौत का खतरा याद आ रहा था अपना देश बोलीं- यूक्रेन से लौटी संस्कृति

प्रयागराज। हम दुनिया में कहीं भी रहे, कुछ भी करें, लेकिन दिल से कभी अपने देश से दूर नहीं होते। हम पर कोई भी संकट आता है तो सबसे पहले हमें हमारा हिंदुस्तान याद आता है। यूक्रेन और रूस के बीच शुरू हुए युद्ध के बीच जब हम फंस चुके थे तो इतना पता था कि हमें अकेला नहीं छोड़ा जाएगा। जरूरत पड़ी तो इंडियन आर्मी यूक्रेन में दाखिल होगी और हमें बचाएगी। हमने न भरोसा छोड़ा था न उम्मीद और उसका नतीजा है कि आज हम अपने देश लौट आए हैं। यूक्रेन के युद्धग्रस्त इलाके से वापस लौटी एमबीबीएस प्रथम वर्ष की छात्रा संस्कृति सिंह ने दैनिक जागरण से बातचीत करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त की। बताया कि भारत से खूबसूरत और यहां से ज्यादा सुकूंन कहीं नहीं है। 24 फरवरी की सुबह छह बजे जब पापा का फोन आया तो उन्होंने कहा कि जल्दी सामान पैक करो और किसी भी हाल में यूक्रेन से निकलो। हम इवानों में थे। यह इलाका पूर्वी यूक्रेन के मुकाबले काफी सुरक्षित था। हम यूरोपियन कंट्री से काफी नजदीक थे। लेकिन एयरपोर्ट आदि को उड़ा दिया गया था। जिसके बाद यहां से जल्द से जल्द निकलना था। हमें बस उपलब्ध कराई गई और बार्डर तक पहुंचे। 26 को हम इवानों से रोमानिया बार्डर पहुंचे। बार्डर पर जाम के कारण हम अपने लगेज के साथ पैदल ही पहुंचे। माइनस चार डिग्री तक पहुंच गया और बर्फबारी हो रही थी। उसमें खुद को जिंदा रखना ही सबसे बड़ी चुनौती थी। सबसे आश्चर्य की बात मात्र दो घंटे की दूरी पर इतना अधिक मौसम चेंज था। हम दो दिन शेल्टर होम में रहे। इस दौरान रोमानिया के नागरिक हमारी मदद के लिए बार बार पूछते रहे।

पीएम मोदी ने यूक्रेन से लौटे प्रयागराज मंडल के पांच मेडिकल छात्रों से वाराणसी में की मुलाकात

प्रयागराज। रूस-युक्रेन युद्ध के बीच फंसे प्रयागराज के छात्रों के वापस लौटने का क्रम तेज हो गया है। उन्हें एयर इंडिया की फ्लाइट से दिल्ली और मुंबई एयरपोर्ट ले

आया जा रहा है। फिर वहां से दूसरी फ्लाइट व सड़क मार्ग के जरिए प्रयागराज भेजा जा रहा है। प्रयागराज पहुंच चुके तीन और प्रतापगढ़ के दो छात्रों को गुरुवार शाम वाराणसी बुलाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एयरपोर्ट पर मुलाकात की। पीएम मोदी ने उनसे बातचीत में कहा कि आगे भी उनके भविष्य का ख्याल रखा जाएगा। पीएम से मिलकर पांचों छात्र भविष्य के लिए आशान्वित हुए। छात्रों ने बताया कि मोबाइल जमा करा लिए जाने की वजह से वे पीएम मोदी के साथ फोटो नहीं ले सके। प्रयागराज के जंघई बाजार के रहने वाले विशाल कुमार उमरवैश्य, रम्मन का पूरा सुलेम सराय की रहने वाली रूचि पांडे व साकेत नगर धूमनगंज के रितिक दिवाकर को गुरुवार की सुबह जिला प्रशासन द्वारा फोन पर सूचना दी गई कि उन्हें प्रधानमंत्री से मिलने के लिए वाराणसी चलना है। कुछ ही देर में सभी को डीएम कार्यालय पर एकत्रित किया गया। डीएम संजय खत्री ने सभी से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री मिलने संबंधी सभी जानकारियां दी प्रयागराज से तीनों छात्रों को एडीएम सिटी के साथ भेजा गया था। इसी तरह यूक्रेन से प्रतापगढ़ लौटे पट्टी क्षेत्र के सचिन और लालगंज की संध्या को भी वाराणसी बुलाकार पीएम मोदी ने करीब 20 मिनट तक बात की। रितिक दिवाकर ने फोन पर बताया कि जब उन्हें सूचना दी गई कि उनसे प्रधानमंत्री मिलने वाले हैं तो पहले उन्हें यकीन नहीं हुआ। दो बार नंबर को वापस देखा और दोबारा से पूछा कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुझसे मिलेंगे। हां में जवाब मिलने के बाद रितिक ने अपनी तैयारी की और अब वह एडीएम सिटी के साथ पीएम से मिलने के लिए बनारस पहुंच चुके हैं। वहीं रूचि व विशाल भी प्रधानमंत्री से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। उन्होंने बताया कि सुरक्षा कारणों से अभी वह बात नहीं कर सकते हैं। पीएम से मिलने के बाद वह उनसे हुई मुलाकात व बातचीत के बारे में जानकारी देंगे। शाम करीब साढ़े चार बजे वाराणसी के बाबतपुर एयरपोर्ट पर रितिक, विशाल और रूचि पांडेय से पीएम मोदी ने मिलकर बात की। कुछ देर बातचीत के बाद पीएम दिल्ली के लिए रवाना हो गए। विशाल, रूचि व रितिक तीनों यूक्रेन में मेडिकल की पढ़ाई के लिए गए हुए हैं। वहां युद्ध शुरू हुआ तो वह बंकर में छिपकर बार्डर तक पहुंचने का प्रयास कर रहे थे। रोमानिया बार्डर पार करने के बाद उन्हें दूतावास से मदद उपलब्ध कराई गई और एयर इंडिया की फ्लाइट से सभी को भारत वापस ले आया गया।

हाथरस केस में दंगा भड़काने के आरोपित पीएफआइ सदस्य अतीकुर्रहमान की सुनवाई 11 मार्च को

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हाथरस केस में दंगा भड़काने और देश द्रोह के आरोपी पीएफआइ सदस्य अतीकुर्रहमान के सभी केसों की सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका की पोषणीयता पर आपत्ति की। इस पर याची अधिवक्ता ने जवाब देने के लिए समय मांगा। कहा कि यह विधि प्रश्न पहली बार उठाया गया है। कोर्ट ने याची को समय देते हुए 11 मार्च को सुनवाई की तारीख तय की है। यह आदेश न्यायमूर्ति अश्वनी कुमार मिश्र तथा न्यायमूर्ति रजनीश कुमार की खंडपीठ ने अतीर्कुहमान की याचिका पर दिया है। याची ने जमानत अर्जी व बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका सहित अन्य याचिकाएं दायर की है। सभी मामलों की एक साथ सुनवाई हो रही है। अपर महाधिवक्ता ने कहा कि सह अभियुक्त सुप्रीम कोर्ट तक जा चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा जमानत अर्जी दे या नियमानुसार अन्य उपलब्ध अनुतोष प्राप्त करें। याची को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने रिमांड मंजूर किया था। पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दिया है। कोर्ट ने चार्जशीट को संज्ञान में लेते हुए वारंट जारी किया है। हाई कोर्ट के क्षेत्राधिकार पर सवाल उठाए गए किन्तु आदेश के खिलाफ पुनरीक्षण अर्जी नहीं दाखिल की गई।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा सिकंदर खान को समाजवादी शिक्षक उत्तर प्रदेश कार्यकारणी में प्रदेश सचिव मनोनीत किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। समाजवादी

पार्टियों के नीति व विचारधारा को शिक्षकों के द्वारा जन जन तक पहुंचाने में काम में आपका कार्य बहुत ही सराहनीय वह संतोषजनक रहा है समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष माननीय नरेश उत्तम पटेल जी के अनुमति से आपको समाजवादी शिक्षक सभा उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी ने प्रदेश सचिव नामित किया जाता है हम आशा करते हैं कि आप अपना उत्तरदायित्व के साथ समाजवादी पार्टी की विचारधारा एवं नीति को जन जन तक पहुंचाने में सहयोग प्रदान करेंगे एवं पार्टी को और अधिक मजबूत एवं गतिशीलता प्रदान करने का कार्य करेंगे।

पूर्व पत्रकार के निधन पर शोक जताया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर नगर पंचायत निवासी मलिक इरशाद अहमद जो अर्शी पूर्व एन आई पी समाचार पत्र के रिपोर्टर थे और बाद में भारतीय जीवन बीमा निगम में एजेंट का कार्य करने लगे। बुधवार को अचानक किडनी फेल्योर की शिकायत पर घरवाले लखनऊ पीजीआई लेकर जा रहे थे। तभी रास्ते में दम तोड़ दिया। शव वापस घर आया। तो कोहराम मच गया। सूचना पाकर घर पर कई पत्रकार तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की।

कोमल के फोन ने गांव भर को परेशानी में डाला

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। कोतवाली के करुआडीह प्रतापपुर गांव की 15 वर्षीय कोमल के फोन ने थाना हिला डाला। बताया जाता है। कि गांव में कूद पड़े। परंतु थाना अध्यक्ष अमित कुमार राय ने दोनों पक्षों के साथ कोमल एवं आकिब को भी थाने बुलाया और वास्तविकता जानी कई घंटे तक आरिफ प्रधान की अगुवाई में दोनों पक्षों की वार्ता थाना

के बच्चों में खेलकूद को लेकर विवाद हुआ। तो बड़े बुजुर्ग भी आ गए। परंतु 15 वर्षीय कोमल ने पुलिस के आला अफसर को सांप्रदायिक झगड़े की सूचना संबंधी फोन देकर पूरा महकमा हिला डाला। बताया जाता है। कि 15 वर्षीय आकिब से कोई विवाद हुआ तो बड़े भी झगड़े प्रभारी के सामने हुई। परंतु कोमल समझौते पर राजी नहीं हो रही थी। बड़े बुजुर्गों के समझाने से मामला शांत हुआ और सुलहनामा थाना अध्यक्ष की मौजूदगी में लिखा गया। अंतः बच्चों ने तो बड़ा रूप दे डाला था।

चौखट पर जिसके जड़ा मोहब्बत का नगीना

(आधुनिक समाचार सेवा)
रामेन्द्र सिंह

लालगंज (प्रतापगढ़)। बाबा मद्दी शहीद की मजार हन्डौर में लगे उर्स में भारत -भारतीय के कौमी

एकजहती मुशायरे की शुरुआत करते हुए जब राष्ट्रीय कवि एवं शायर डॉ0रणजीत सिंह ने नाते पाक की यह पंक्तियाँ चौखट जिसके जोड़ा मोहब्बत का नगीना,जब तक हम पहुँच जाते नहीं मक्का मदीना पढी तो पूरी महफिल पाकीजगी से गुलजार हो गई। उन्होंने कौमी एकता के तमाम कलाम भी पेश किए उन्होंने जब पढा पड़ोसी के दिए से हम अपने दिए जलाते हैं,हमारी राह में मजहब- धरम आडे न आते हैं, गाँव में अपने मय्यत होती है हिंदू या मुसलमान की, जनाजे को बारी-बारी से हम काँधा लगाते हैं तो पूरी महफिल ने वाहवाही करते हुए उनका एहतराम किया। अजय सोनी के सांप्रदायिक सौहार्द के गीत जहाँ खूब सराहे गए वहीं जाहिद हुसैन जाहिद की मुफलिसी पर पढी गई ग़ज़ल खूब वाहवाही पाई।रायबरेली के अब्दुल मजीद रहबर की तरनुम्म में पढ़ी गई गजलें मिठास घोलने का काम कीं तो रायबरेली के ही रमजान अली सफीर की गजल भी खूब सराही गई।रायबरेली के राम केवल लहरी ने हास्य व्यंग्य की कविता कोटेदार चालीसा पढ़ कर लोगों को खूब हँसाया तो अतीक प्रतापगढ़ी के शेर भी खूब सराहे गए। निजामत कर रहे शकील साहिर के एक से बढ़कर एक शेर पूरी महफिल में जान डालते रहे।उनकी नज्म खूब दाद पाई।मुशायरे की सदारत मोहम्मद कमाल ने किया तो कन्वीनर मोहम्मद अमीन कल्लू का भारत- भारतीय के अध्यक्ष डॉ0रणजीत सिंह ने सारस्वत सम्मान किया। उन्होंने सड़वा दुबान के प्रधान कुंवर बहादुर वर्मा का भी सारस्वत सम्मान किया।इसके अलावा भारत-भारतीय ने मोहम्मद कमाल,मोहम्मद अंसार, मोहम्मद अफसर,मोहम्मद कलाम,मिर्जा सफीक बेग, इश्तिखार अहमद छोटे भाई,बाबू लाल कोरी आदि का संस्था के द्वारा अभिनंदन किया। मुशायरे की शुरुआत खुसूसी मेहमान नीतेश सिंह बीरू ग्राम प्रधान ने किया।उन्होंने कहा कि बाबा की मजार पर आयोजित यह मुशायरा हम गाँव वालों के भाईचारे को बढ़ाने में बहुत ही मददगार साबित होता है।आने वाले दिनों में यह मुशायरा ऊँचाइयों को छूता जाएगा और गाँव वाले इससे कुछ न कुछ सीखेंग। इस अवसर मो0अफजल,अब्दुल समद,पत्रकारों में मो0फारूख,अरविंद दुबे,कपिल मौर्य,रामेन्द्र सिंह तथा लाल बहादुर सिंह, राकेश सिंह,राम कुमार कोरी,उदय राज मिश्र,संदीप दुबे,सातकीय सिंह सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।मुशायरे के फाउंडर महमूद आलम ने सभी का आभार व्यक्त किया।भारत-भारतीय के कोषाध्यक्ष प्रहलाद मोदनवाल ने सबका स्वागत एवं अभिनंदन किया।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.**प्रमाण पत्रः-** सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। 2.**चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। 3.**आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। 4.**आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। 5.आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। 6.**कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। 7.**छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। 8. अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। 9.**दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 मार्च 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

बेल्थरारोड विधानसभा के आदर्श बूथ पर सेल्फीलेने से पुलिस बल हुए खफा,युवको को खदेड़ा

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल प्रसाद गुप्त

बलिया। जिले के बेल्थरारोड विधानसभा क्षेत्र में उस समय विवाद शुरू हो गया जब एक आदर्श बूथ पर बने सेल्फी प्वाइंट पर सुरक्षा बलों ने मतदाताओं को बल पूर्वक भगाना शुरू कर

दिया।वहीं बेल्थरारोड के आदर्श बूथ पर सेल्फी लेने से सुरक्षा बलों ने रोका और खदेड़ने लगे। इसकी जानकारी नगर पंचायत चेयरमैन दिनेश कुमार गुप्त को हुई तो वे तत्काल मौके पर पहुंचे और पुलिस बल के इस कारवाई का हस्तक्षेप करते हुए इस बात की शिकायत डीएम से की। तदुपरांत चेयरमैन की शिकायत पर डीएम के पास मामला पहुंचते ही उन्होंने एसडीएम को मौके पर भेजकर जांच पड़ताल शुरू करवाई। किसी तरह मामला शांत हुआ। मिली जानकारी के अनुसार बेल्थरारोड विधानसभा में आदर्श बूथ बने जीएमएएम इंटर कालेज पर सुरक्षा बलों ने सेल्फी प्वाइंट तक मोबाइल ले जाने से वोटरों को रोक दिया। जिसके कारण लोगों में जबरदस्त नाराजगी रही। मतदान के बाद सेल्फी लेने और इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट करने की उम्मीदें धरी रह गई। आनन फानन लोगों ने इस दौरान अन्य अधिकारियों को पुलिस के बर्ताव को लेकर सुरक्षा बलों की शिकायत भी की गई। अधिकांश लोगों की शिकायत पर नगर पंचायत चेयरमैन दिनेश गुप्ता भी मौके पर पहुंचे और इस बाबत हस्तक्षेप किया। वहीं बूथ पर तैनात आईटीबीपी के सुरक्षाबलों के साथ वार्ता की। जिसके बावजूद यहां मोबाइल लेकर सेल्फी प्वाइंट तक जाने से लोगों को रोका जाता रहा। नपं चेयरमैन ने तत्काल डीएम से मोबाइल पर इसकी शिकायत की और सुरक्षा बलों से वार्ता कराया। इस बाबत सुरक्षा बलों ने बताया कि बिना मास्क के वोटरों को यहां से भगा दिया जा रहा है। जबकि उन्हें मास्क के लिए प्रोत्साहित कर मतदान में शामिल कराया जाना चाहिए। इस बीच करीब दस बजे रिटर्निंग अफसर एवं एसडीएम राजेश गुप्ता भी मौके पर पहुंच गए। जिनके निर्देश के बाद लोगों को सेल्फी प्वाइंट पर फोटो लेने के लिए जाने दिया गया और मास्क के बजाए रुमाल बांधकर भी वोट देने की अनुमति दे दी गई। वहीं बेल्थरारोड विधानसभा के आदर्श मतदान केंद्र जीएमएएम इंटर कॉलेज पर सेल्फी प्वाइंट तक मोबाइल लेकर नहीं जाने दिए जाने के कारण सुरक्षाबलों से नगर पंचायत चेयरमैन दिनेश गुप्ता भी आपत्ति जताने पहुंचे और वोटरों के साथ दुर्व्यवहार को अनुचित बताया। आदर्श नगर पंचायत के चेयरमैन ने शांति पूर्ण मतदान सम्मपनन्होने पर अधिकारियो और चुनाव मे ड्यूटी मे लगे सभी कर्मचारियो को धन्यवाद ज्ञापित किया।

बच्चों की ऊर्जा से जिला भरेगा मतदान की उड़ान

आजमगढ़ । बच्चों की ऊर्जा से आजमगढ़ में मतदान का आसमानी उड़ान भरेगी। छात्र-छात्राएं खुद को प्रथम लाने के लिए तूफानी रफ्तार से एक-एक वोटर तक पहुंच बनाते हुए 1.75 लाख का आंकड़ा छू लिए हैं। 44281 महिलाओं के हाथों में मेहंदी सजाई जा चुकी है, जिनको स्कूली छात्राओं ने परिवार समेत मतदान करने की शपथ दिलाई है। यह परिणाम डीएम की ओर से शुरू की गई प्रतियोगिता का है, जिसमें उन्होंने वर्ष 2017 में खराब परफार्मेंस वाले 600 बूथों पर वोट फीसद बढ़ाने की जिम्मेदारी सौ स्कूलों को दी है। चुनाव बाद मिशन में शानदार प्रदर्शन करने वाले दस स्कूलों के बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले स्कूलों के टीचर, बच्चों का कलेक्टर खुद से ख्याल रखेंगे। गांव-गांव पहुंच रही स्कूली छात्राएं महिलाओं के हाथों में मेहंदी सजाते गीत गा रहीं कि आंटी भूल न जाना, मतदान के दिन बटन दबाना । मेहंदी लगवाने के बाद छात्राएं उन्हें शपथ भी दिला रहीं। डीएम का प्रयोग महिलाओं के दिलो-दिमाग पर छा जाने वाला है। सौ स्कूलों के बच्चों के रोजाना टोली बनाकर निकलने से गांव में चुनाव और मतदान के प्रति लोगों में जबरदस्त उत्साह है। महिलाओं के एक हाथ पर मेहंदी से वोट डालने जाना है, अपना फर्ज

निभाना है लिखा जा रहा तो दूसरे पर चुनाव की तिथि सात मार्च 2022 और स्वास्तिक बनाया जा रहा है। शहर से लेकर गांवों तक में घरों की कुंडी बजना शुरू हो जा रही है। दरवाजों के खुलने पर पता चल रहा कि बच्चे कलेक्टर की पाती पकड़ा रहे हैं। बता रहे कि डीएम साहब ने निवेदन किया है कि आप वोट डालने जरूर अपने बूथ पर पहुंचें। 90517 घरों तक बीते सोमवार तक डीएम की पाती पहुंच चुकी थी। 'आजमगढ़ के सभी मतदाताओं से मेरी अपील है कि सात मार्च को अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। आपका एक मत इतिहास बना सकता है। आजमगढ़ को पूरे प्रदेश में सर्वाधिक मतदान प्रतिशत का नाम दिला सकता है। चलो चलें मतदान करें।

49 मतदान कार्मिक प्रशिक्षण में अनुपस्थित, चेतावनी

आजमगढ़। ज्योति निकेतन स्कूल में चल रहे प्रशिक्षण के दौरान दोनों पालियों में कुल 49 मतदान कार्मिक अनुपस्थित रहे। नोडल अधिकारी मतदान कार्मिक एवं प्रशिक्षण सीडीओ आनंद कुमार शुक्ला ने चेतावनी दी कि यदि तीन मार्च को सुबह 10 बजे से आयोजित प्रशिक्षण में शामिल नहीं होते हैं तो लोक प्रतिनिधित्व की धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी।

प्रत्याशियों का विधानसभा वार व्यय का तैयार करें ब्योराः बालाकृष्णन

गाजीपुर । विधानसभा निर्वाचन को लेकर विशेष व्यय प्रेक्षक बीआर बालाकृष्णन ने रायफल क्लब में बुधवार को जिला निर्वाचन अधिकारी मंगला प्रसाद सिंह, व्यय प्रेक्षक आशीष डेहरिया, मंजूनाथ टी तथा पुलिस अधीक्षक संग समीक्षा बैठक की। उन्होंने बिदुवार व्यय प्रेक्षकों से स्टेटिक निगरानी दल, उड़नदस्ता, वीडियो निगरानी दल, वीडियो अवलोकन दल, व्यय अनुवीक्षण सेल, एम सी एम सी कमेटी, लेखा टीमों की कार्यवाही की जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि गठित टीमें चुनाव में अलर्ट मोड में और अधिक सक्रियता के साथ फील्ड में काम करें। जिले की सीमाओं पर चुनाव के मद्देनजर सतर्कता बरतें। प्रत्याशियों व राजनीतिक दलों के तरफ से चुनाव में व्यय की जा रही धनराशि का विवरण विधानसभा क्षेत्रवार तैयार करने को कहा। विज्ञापन एवं आनलाइन लेन-देन का आकलन कर उनके व्यय खाते में सम्मिलित करें। डीएम ने व्यय प्रेक्षक को आश्वस्त किया कि आयोग की गाइड लाइन का अनुपालन कराया जा रहा है। सभी राजनीतिक दलों के साथ बैठक कर आदर्श आचार संहिता के बारे में अवगत करा दिया गया है। कहीं से उल्लंघन की जानकारी मिलती है तो संबंधित के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक रामबदन

सिंह ने भी स्वतंत्र, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त चुनाव कराने की तैयारियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उपजिला निर्वाचन अधिकारी अरुण कुमार सिंह, डीएफओ प्रदीप कुमार, वरिष्ठ कोषाधिकारी उमेश कुमार उपाध्याय उपस्थित रहे।

अखिलेश यादव बोले हमारे और ममता दीदी के आने से भाजपा तिमिलाई कई हजारों की जनसैलाब गठबंधन की रैली में उमड़ा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी)। ऐढे में ममता व अखिलेश का रैली के दौरान सपा उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में छठे फेज की वोटिंग के बीच प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (प्रसपा) के प्रमुख शिवपाल यादव ने कहा है कि जनता के कहने पर और भारतीय जनता पार्टी को यूपी की सत्ता से हटाने के लिए उन्होंने अखिलेश यादव के साथ मतभेद खत्म किए हैं। उन्होंने कहा कि अब जनता की बारी है कि बीजेपी को सत्ता से हटाए। वाराणसी के हरहुआ ऐढे में जनसभा को संबोधित करते हुए शिवपाल यादव ने यह भी कहा कि अखिलेश की सरकार में ही यूपी का विकास हुआ। सपा के साथ गठबंधन करने को लेकर शिवपाल यादव ने कहा, ''दोस्तों जब हम यूपी के दौरे पर निकले थे, उस समय आपने एक ही मांग की थी, एक हो जाइए, चाचा-भतीजे एक हो जाओ। तभी बीजेपी की सरकार हट सकती है। आपकी बात को मानकर मैं और अखिलेश एक हो गए हैं। अब आपको निणय्न लेना है। 10 मार्च को आपको इस प्रदेश से बीजेपी का सफाया करना है।'' वही अखिलेश यादव और उनके सहयोगी दल की रैली में पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी पहुंची ममता ने मंच से मां दुर्गा की आराधना में इस लोक पढ़ें। ममता ने कहा कि अखिलेश मेरा छोटा भाई है अखिलेश आपके घर का बेटा है। आप लोग इस का साथ दीजिए ममता ने कहा कि तय है कि यूपी में मुख्यमंत्री अखिलेश ही होंगे ममता ने कहा बीजेपी का हार क्लियर है ममता बनर्जी ने कहा कि मैं घाट से लौट रही थी तब मेरी गाड़ी पर डंडा मारा गया मेरे गाड़ी को घेर लिया गया काले झंडे दिखाए मैं निकल कर बाहर खड़ी हो गई। क्योंकि मैं डरती नहीं हूं लड़ाकू हूं। मैं समझ गई कि बीजेपी यहां हार गयी है। ममता ने कहा यूपी में बहन बेटियों का सम्मान नहीं होता है। योगी पर निशाना साधते हुए अपने शब्दों में कहते हुए निकल पड़ी ममता ने कहा मेरी बेइज्जती का बदला यूपी की मां बहन लेगी ममता ने कहा कल कि मेरी बेइज्जती का बदला यूपी की मां बहन लेगी हमें यूपी आना चाहिए या नहीं या यहां की मां बहन बताएगी याद रखना बीजेपी ने जो पाप किया है वह पाप भूला नहीं जाएगा बीजेपी को एक धक्का दो और पूरे यूपी से फेंक दो। राष्ट्रहित में बीजेपी को फेंक दो लखीमपुर मैं बीजेपी जो किया है उसके लिए धक्का दो। हिम्मत से खेला होगा हम मरने के लिए

तैयार हैं लेकिन हम डरने के लिए तैयार नहीं है। ममता बनर्जी ने कहा आप सभी का उत्साह देखकर ऐसा लग रहा है। कि सुबह आने वाली है रोशनी आने वाली है अंधेरा जाने वाला है यूपी का अच्छा दिन आने वाला है देश में बीजेपी जाने वाली है। सपा गठबंधन जीतेगा बीजेपी हारेगी और हाथी की यूपी की माटी और धरती को नमन करके आप सभी के प्रति आभार एक साथ में लड़ो एक साथ आगे बढ़ो हम दिखाएंगे सूरज की रोशनी किसके ऊपर हैं। पूर्वांचल के लोग ही करेंगे भाजपा की सफाई अखिलेश रैली को संबोधित करते हुए अखिलेश ने कहा कि ममता दीदी जी के यहां आते ही ना केवल बीजेपी हारेगी आज जहां वोट पड़ रहा है छठे चरण में और जब सातवें चरण में जब वोट पड़ेगा तब बीजेपी का सफाया हो जाएगा पूर्वांचल की जनता बीजेपी को साफ नहीं करेगी बल्कि सफाया करेगी जनता सपा सरकार बनने का मन बना चुकी है। छठे चरण में जनता बीजेपी को छांट देगी। और सातवां चरण आते आते गठबंधन का इतना मजबूत बहुमत होगी। जिसका अंदाजा बीजेपी लगा नहीं सकती हैं। अखिलेश ने कहा बीजेपी ने नहीं की होगी अखिलेश कि हम पूर्वांचल का अद्भुत विकास करेंगे। रेलवे स्टेशन पानी के जहाज बादशाह एयरपोर्ट बेच रहे हैं बीजेपी जब सब बिक जाए तो कौन मांगेगा नौकरी संविधान में जो अधिकार मिलते थे। उन अधिकारों को कौन देगा यह चुनाव यूपी के भाग्य का चुनाव है। यह चुनाव इस बात के लिए है कि नहीं भारत का संविधान बचेगा या नहीं बचेगा।इतना इतिहासिक समर्थन कभी नहीं मिला जो आज मिल रहा है। बीजेपी के लोगों ने सपना दिखाया था कि बनारस को क्योंटो बनाएंगे बना देंगे। लेकिन सब झूठ निकला इस बार बनारस के लोग भाजपा के झूठ का रस निकालने का काम करेंगे कोई दंडवत होकर माफी मांग रहा है कोई कान पकड़ कर उठक बैठक कर रहा है। कोई तेल मालिश कर रहा है। बीजेपी वाले जान चुकी हैं कि किसान और युवा उनको माफ करने वाले नहीं है अखिलेश ने लोगों से कहा कि मां गंगा में बहती लाशों को भुल मत जाना पैदल चलने वाले लोगों को भुला मत जाना याद रखना जिस गांव को बीजेपी ने गोद लिया उस गांव में बीजेपी प्रधानी हार गई। जयंत बोले भाजपा वाले मदारी की तरह कार्य कर रहे है जयंत चौधरी ने कहा कि आप सभी को सतर्क रहना होगा यहां सब लोग मदारी हैं और उनके पीछे अंध भक्तों की टोली है आप उनकी कोई गलती बताओगे तो अंधे भक्त कहेंगा कि 70 साल से बड़ा गड्ढा था मोदी जी ने छोटा गड्ढा बनाया है इनकी बातों और कुर्तीको कार्टून आप सभी को निकालना होगा बनारस के सबसे चर्चित मिठाई मलाई ठंडाई में मिलती है और वह गर्मी देती है बाबाजी मुंगैबो वाला भाषण देते हैं। आज हमने बाबा को नया नाम दिया है बाबा मुंगैबो वाले को आप लोग 7 मार्च को ऐसा वोट दो कि मुगैबो वाले बाबा जी मिस्टर इंडिया वाली घड़ी की तरह की राजनीतिक से गायब हो जाए। योगी मोदी के ललका व करियवा सांड से सब बा परेशान सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर बोलें कितना लोग अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री बनावे चाहत हउव हाथ उठावा ई प्रदेश मैं योगी और मोदी का ललका सांड सब केहू बा बहुत परेशान बा बिजली के बिल से पूरा प्रदेश परेशान हैं। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर सरकारी कर्मचारी परेशान है।बेरोजगारी से नौजवान और महंगाई से आम आदमी परेशान है योगी बाबा मेरी हत्या कराना चाहते हैं तो करा दें। लेकिन अब यह लड़ाई नहीं रुकेगी। सभी लोगों अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बना दो गर्मी नहीं निकलने देंगे भर्ती निकालेंगे। हमारे गठबंधन ने देश के प्रधानमंत्री को मजबूर कर दिया कि वह जिले जिले में घूमकर वोट की भीख मांग रहें हैं। मोदी जी हम वही पुराने गंदे दिन लौटा दो हमें आपके अच्छे दिन नहीं चाहिए 10 मार्च की सुबह दो गाने बजेंगे हमारे अंगने में तुम्हारा क्या काम है। चल सन्यासी मंदिर चल तेरा कार्य खत्म।

बलिया के बांसडीह में भाजपा प्रत्याशी केतकी सिंह की वायरल वीडियो को लेकर हुआ धधक्का-मुक्की

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल प्रसाद गुप्त

बलिया। जिले के बांसडीह विधानसभा के असेगा बूथ पर भाजपा प्रत्याशी केतकी सिंह और उनके ससुर और मतदाताओं के साथ धक्का-मुक्की की घटना सामने आई है। वहीं बांसडीह विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी केतकी सिंह

का एक वीडियो वायरल हो रहा है। केतकी का मुख्य मुकाबला नेता प्रतिपक्ष रामगोविंद चौधरी से है। केतकी पर आरोप है कि एक क्षेत्र विशेष में जा कर वह मतदाताओं को धमका रही हैं।इस आशय का एक वीडियो गुरुवार को खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में वह किसी को दस जूते मारने और एक गिनने की बात कह जा रही हैं। इस मामले मे स्थानीय लोगों के अनुसार उनका सपा नेता सुनील सिंह से यहां पर विवाद होने का मामला बताया जा रहा है। इस बाबत देखते ही देखते उनका धमकाने और उनके साथ ही कुछ कार्यकर्ताओं का कुछ लोगों संग धक्का मुक्की और विवाद के साथ ही झड़प और गाली-गलौज करने का वीडियो वायरल हो गया। क्षेत्र में देखते ही देखते यह प्रकरण इतना चर्चित हो गया कि वीडियो को सपा ने ट्वीट करते हुए चुनाव आयोग से इस बात की शिकायत की है।इसमें उनके द्वारा मतदाताओं को धमकाने का आरोप लगाया गया है। सपा ने की चुनाव आयोग से शिकायत सपा ने चुनाव आयोग से शिकायत करते हुए लिखा है कि 'बलिया जिले की बांसडीह विधानसभा से बीजेपी प्रत्याशी अपने समर्थकों के साथ अभद्रता करते हुए धमकी दे रही हैं। जिला प्रशासन और चुनाव आयोग तत्काल संज्ञान लेते हुए भयमुक्त और निष्पक्ष मतदान कराने की कृपा करें'।

महंगाई से यूपी की जनता परेशानः विनायक राउत

जमानियां (गाजीपुर) । महाराष्ट्र शिवसेना के रतनगिरि से सांसद विनायक राउत ने जमानियां विधानसभा से शिवसेना प्रत्याशी सीमा तिवारी के पक्ष में अस्पताल रोड स्थित एक मैरेज लान में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा, धनवानों और बलवानों की पार्टी है। इसमें गरीब के लिए कोई जगह नहीं है। केंद्र सरकार ने उज्ज्वला योजना के तहत गैस चूल्हा और सिलिंडर गरीबों को दिया लेकिन दो साल बाद ही गरीबों को मिलने वाली गैस सब्सिडी को समाप्त कर दिया। आज फिर से गरीब महिलाएं लकड़ी पर चूल्हा जला रही हैं। इस सरकार में महंगाई व बेरोजगारी चरम पर है। यूपी में युवाओं को रोजगारों मांगने पर पुलिस की लाठियां मिल रही हैं।

चार वाहनों के शीशे से उतारी गई काली फिल्म

जखनियां (गाजीपुर)। मऊ जनपद की सीमाओं से सटे जलालाबाद चेक पोस्ट, करुई, नायकडीह, हरदासपुर कला सहित मुख्य बाजार में उड़नदस्ता टीम के प्रभारी फैज अहमद ने सघन चेकिग अभियान चलाया। जलालाबाद चेक पोस्ट पर स्कार्पियो समेत चार वाहनों से काली फिल्म उतारी गई। चेताया कि कोई भी वाहन बिना मजिस्ट्रेट की अनुमति के चुनाव सामग्री व बैनर लेकर न चलें। टीम में विवेक सिंह, सौम्या मिश्रा, एकता त्रिपाठी, धन्नजय कुमार आदि थे।

बलिया के 7 सीटों की मतदान मे कहीं भाजपा-सपा की सीधी लड़ाई, कहीं बागियों ने रोचक बनाया मुकाबला

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल प्रसाद गुप्त

बलिया। भूतपूर्व पीएम चंद्रशेखर की गृह जिले में छठवें चरण में बलिया नगर,बांसडीह, बेल्थरारोड, सिकंदरपुर,बैरिया और रसड़ा के लिए हुए मतदान के उपरांत सात सीटों पर कुल 82 प्रत्याशियों की किस्मत दांव पर लगी है। यूपी विधानसभा चुनाव के छठे चरण में आज शांति के बीच बलिया जिले की सात सीटों पर मतदान हुआ। मतदान के इस महापर्व पर दोपहर एक बजे तक करीब 37 फीसदी मतदान दर्ज किया गया है। सुबह के समय कई केंद्रों पर लंबी लाइन तो कई केंद्र खाली देखे गए। कई मतदान केंद्रों पर ईवीएम खराब होने की सूचना आई।जिसके परिणाम स्वरूप मतदाताओ को थोड़ी वोटिंग शुरू होने में दिक्कत हुई। बागी इस बलिया की सात सीटों पर कुल 82 प्रत्याशियों की किस्मत दांव पर लगी है।इनमें मंत्री उपेंद्र तिवारी, आनंद स्वरूप शुक्ला के अलावा सपा से नारद राय, राम गोविंद चौधरी, जियाउद्दीन रिजवी, उमाशंकर सिंह, सुरेंद्र सिंह जैसे नेताओं की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है।कुल सात विधानसभा सीटों की बात करें तो कुछ सीटों पर भाजपा और सपा की सीधी टक्कर मानी जा रही है। मतदाताओं की खामोशी से उम्मीदवारों की बढ़ी धड़कन कहीं बसपा का प्रभाव तो कहीं चुतुष्कोणीय मुकाबले के भी आसार हैं।आमने-सामने की लड़ाई के बीच बागी भी दलों का खेल बिगाड़ रहे हैं। विधानसभा चुनाव के लिए आज मतदान होगा।एक माह से ज्यादा समय से संभावित दावेदार और प्रत्याशी तथा एक सप्ताह से स्टार प्रचारक जनपद की सातों विधानसभा सीटों को मथते रहे।समर्थक तो अपने दलों के साथ खुलकर हैं,लेकिन आम मतदाताओं की खामोशी राजनीतिक दलों के साथ-साथ उम्मीदवारों की चिंता भी बढ़ा रही है। प्रत्याशी अभी तक मतदाताओं के रुख को भांप नहीं पा रहे हैं। मतदाताओं की खामोशी से उम्मीदवारों की सांसें फूल रही हैं। बलिया नगर में भाजपा और सपा मे काटे की लड़ाई बलिया नगर विधानसभा पर फिलहाल भाजपा और सपा के हैवीवेट प्रत्याशियों के बीच सीधी लड़ाई नजर आ रही है। बसपा जहां इस लड़ाई को त्रिकोणीय बनाने का प्रयास कर रही है। वहीं, भाजपा का एक बागी पार्टी के वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा है। भाजपा ने यहां से प्रदेश उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह पर दांव लगाया है। भाजपा के मतों में सेंध लगाने के लिए जितेंद्र तिवारी वीआईपी से मैदान में हैं।उनके सामने सपा से पूर्व मंत्री नारद राय हैं। बसपा के व्यापारी शिवदास प्रसाद उर्फ मदन वर्मा लड़ाई को त्रिकोणीय बनाने की कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस ने यहां से ब्राह्मण प्रत्याशी ओम प्रकाश तिवारी को उतार कर भाजपा की परेशानी बढ़ाई है। बैरिया मे बहुचर्चित सीट की लड़ाई हुई दिलचस्प बैरिया विधानसभा सीट पर इस बार पूरे प्रदेश की नजरें गड़ी हुई हैं। फायर ब्रांड नेता एवं अपनी अलग पहचान रखने वाले विधायक सुरेंद्र सिंह टिकट कटने पर भाजपा से बगावत कर वीआईपी से मैदान में हैं। बीजेपी ने यहां के चुनाव को अपनी नाक का सवाल बनाते हुए राज्यमंत्री आनंद स्वरूप शुक्ला को मैदान में उतार दिया है। वही सपा ने पर्व विधायक जयप्रकाश अंचल को प्रत्याशी बनाया तो टिकट मांग रहे सुभाष यादव बगावत पर उतर आए। फिर से बसपा का दामन थामा और घोषित टिकट का बदलवा बसपा से प्रत्याशी भी बन गए। ऐसे में भाजपा और सपा दोनों ही बगावत से दो-चार हैं। बेल्थरारोड मे त्रिकोणीय लड़ाई के आसार भूतपूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के गृह विधानसभा क्षेत्र तीन जिलों के सीमा पर स्थित बेल्थरारोड जनपद की एक मात्र सुरक्षित विधानसभा है। भाजपा ने अपने सिटिंग विधायक धनंजय कननैजिया का टिकट काटकर बसपा से आए छट्टू राम पर भरोसा जताया है। सपा से गठबंधन में मिली इस सीट से सुभासपा ने गोरखपुर के हंसू राम तो बसपा ने प्रवीण प्रकाश को प्रत्याशी बनाया है। इनके बीच कांटे की लड़ाई है। यह सीट अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। फेफना मे भाजपा और सपा के बीच सीधी टक्कर फेफना विधानसभा सीट से इस बार राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार उपेंद्र तिवारी हैट्रिक लगाने के लिए मैदान में है। सुभासपा के साथ मैदान में उतरी सपा इस बार उपेंद्र तिवारी की अच्छी घेराबंदी की है। यादव बहुल सीट पर बसपा ने केडी यादव को प्रत्याशी बनाया है। सपा के संग्राम सिंह यादव परंपरागत वोटों के सहारे जीत के प्रति आश्वस्त हैं। कांग्रेस से ब्राह्मण प्रत्याशी भी मैदान में है। बांसडीह मे जीत का चौका रोकने के लिए मजबूत घेराबंदी बांसडीह विधानसभा से जीत का चौका लगाने के लिए राम गोविंद चौधरी पांचवीं बार चुनाव मैदान में हैं। सुभासपा छ.ोड़कर बसपा से मानती राजभर मैदान में उतरीं है। वहीं केतकी सिंह भाजपा और निषाद पार्टी के गठबंधन से मैदान में हैं।उन्हें अपने निर्दलीय मतों के साथ भाजपा के कोर वोट, मल्लाह वोट और तीन बार से विधायक के विरोध स्वर की आस है।उनके लिए भी भाजपा छोड़ वीआईपी से मैदान में आए कनक पांडेय और कांग्रेस से ब्राह्मण प्रत्याशी पुनीत पाठक परेशानी बढ़ाएंगे। रसड़ा मे बसपा की घेरेबंदी में जुटी भाजपा और सुभासपा वर्ष 2012 और 2017 के विधानसभा चुनाव में रसड़ा सीट से बसपा के उमाशंकर सिंह विधायक बन रहे हैं। सपा ने ये सीट सुभाषपा को गठबंधन में दी है। सुभासपा से पहले भाजपा ने यहां से बब्बन राजभर को प्रत्याशी बना उसका खेल बिगाड़ दिया। सुभासपा ने महेंद्र चौहान को प्रत्याशी बनाया है। दोनों ही दल बसपा को घेरने में जुटे हैं। कांग्रेस से महिला ओम लता प्रत्याशी हैं। सिकंदरपुर में त्रिकोणीय लड़ाई सिकंदरपुर विधानसभा सलेमपुर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आती है। फिलहाल भाजपा के संजय यादव यहां से विधायक और वर्तमान में प्रत्याशी हैं । 2017 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने सपा के मोहम्मद जियाउद्दीन रिजवी को 23 हजार से ज्यादा मतों के अंतर से हराया था। इससे पहले यहां से सपा और बसपा के उम्मीदवार जीतते आ रहे थे। 2012 में सपा के जियाउद्दीन रिजवी, 2007 में बसपा के भगवान पाठक, 2002 में सपा के जियाउद्दीन रिजवी ने चुनाव जीता था। पिछली बार यहां कमल खिला, अब देखना दिलचस्प होगा कि 2022 में बीजेपी अपनी यह सीट बचाकर रख पाती है या वापस सपा-बसपा का कब्जा होगा।

ससुराल से लौट रहे मोपेड सवार की नाली में गिरकर मौत

हलिया (मीरजापुर)। क्षेत्र के अदवां बांध के नीचे स्थित नाली में गिरकर मंगलवार की देर रात ससुराल से लौट रहे मोपेड सवार छोटेलाल (50) की मौत हो गई। इससे परिवार में रोना-पिटना मच गया। क्षेत्र के अहुगीकला गांव निवासी छोटेलाल मंगलवार की शाम अपने ममियां ससुर को ससुराल अहुगी खुर्द गांव में छोड़ने के लिए मोपेड से गया था। उन्हें छोड़कर वह देर रात में मोपेड से अकेले लौट रहा था। अदवा बांध के नीचे सामने से आ रहे वाहन से बचने के चक्कर में अनियंत्रित हो गया और नाली में मोपेड सहित गिर गया। गंभीर रूप से घायल होकर वहीं पड़ा रहा। जब उधर से गुजर रहे लोगों की नजर पड़ी तो उन्होंने बाहर निकाला। फोन से जानकारी पर स्वजन आनन-फानन मौके पर पहुंचकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। मृतक को दो पुत्र व दो पुत्री हैं। मौत की खबर सुनते ही मृतक की पत्नी समेत पूरा परिवार रोने-बिलखने लगा। दूसरे दिन सुबह थाने पर पहुंचे ग्राम प्रधान राजेश अग्रहरि ने पुलिस को घटना की सूचना दी। थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह ने बताया कि शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

प्रोजेक्ट अंकुर के तहत पौधारोपण महाअभियान शुरू

अनपरा (सोनभद्र)। एनसीएल मुख्यालय में मंगलवार को पौधारोपण महाअभियान अंकुर का शुभारंभ हुआ। मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में पौधरोपण का संकल्प लिया गया। एक से 5 मार्च तक मनाए जा रहे इस महाअभियान के तहत एनसीएल की सभी परियोजनाओं के कर्मी, उनके स्वजन व अन्य हितग्राही भाग ले रहे हैं। इस महाभियान से जुड़कर पौधारोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। कर्मचारियों को वायुदूत-अंकुर एप के माध्यम से पौधारोपण के बाद उसकी तस्वीर अपलोड करने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। स्थापना से लेकर अब तक कंपनी ने 2.53 करोड़ से अधिक पौधे लगाए हैं। वित्तीय वर्ष 2021-22 में एनसीएल ने अधिभार डंप तथा आसपास के क्षेत्र में लगभग 294.51 हेक्टेयर भूमि पर 6.5 लाख से अधिक पौधारोपण किया गया है। इस दौरान अध्यक्ष व निदेशक भोला सिंह, निदेशक डा. अनिद्य सिन्हा, राम नारायण दुबे, जेसीसी के सदस्य पीके सिंह, सर्वेश सिंह समेत तमाम महाप्रबंधक, श्रमिक संघ प्रतिनिधि एवं कमिन्यों ने मुख्यालय परिसर में पौधारोपण किया। शक्तिनगर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ परिसर की देखरेख में आयोजित सात दिन की विशेष शिविर के पांचवें दिन का शुभारंभ लक्ष्य गीत से हुआ।

कैसे होगी खेतों की सिचाई नहरों की हाल बदहाल

राजगढ़ (मीरजापुर)। विकास खंड क्षेत्रों में नहरें जगह-जगह क्षतिग्रस्त होने के कारण बदहाल हैं। क्षेत्र के धनसिरिया, नौडिहवा, भगवानपुर, गढ़वा, कोन भरुहवा, निकरिका, बिसुनपुरा रजवाहा से निकली नहरों में पानी आता है, लेकिन नहरों का कटान होने से जगह-जगह पानी बेकार हो जा रहा है। खेतों में पानी नहीं पहुंच पा रहा है, निजी साधन से

आता है, लेकिन क्षतिग्रस्त होने के कारण खेतों तक नहीं पहुंच पाता है। इससे फसलें सिचाई के अभाव में सूख जाती हैं। किसानों का आरोप है कि ठेकेदार द्वारा नहर मरम्मत के दौरान घटिया क्वालिटी का सामग्री प्रयोग किए जाने के कारण क्षतिग्रस्त हो गई है।क्षेत्र के किसान जगदीश सिंह, पप्पू सिंह, हरि राम सिंह, कृष्णा कुमार सिंह, संदीप कुमार, मनोज आदि ने बताया कि क्षतिग्रस्त होने से सिचाई नहीं हो पा रही है। नहर में पानी तो सिचाई कर रहे हैं। ठेकेदार की लापरवाही किसानों पर भारी पड़ रही है। सरकार दो गुना आय करने की बात करती है, लेकिन ठेकेदार की लापरवाही किसानों को महंगी पड़ रही है। बताया कि धनसिरिया ग्राम सभा के नौडिहवा, भगवानपुर नहर क्षतिग्रस्त हो गई हैं। पुरैनिया ग्राम सभा में नहरें भी क्षतिग्रस्त होने से खेतों में पानी नहीं जा पा रहा है। हर घर नल योजना के तहत पाइप लाइन लगाने से नालियां पूरी तरह से पट गई हैं। जब काम शुरू हुआ तो नहरें खुल गईं। इससे काम नहीं हो पाया। ऐसे में कटान से पानी इधर-उधर बह रहा है।

मार्च तक त्रिवेणी एक्सप्रेस का शक्तिनगर व सिगरौली नहीं होगा संचालन

सोनभद्र। शक्तिनगर व सिगरौलीवासियों को त्रिवेणी एक्सप्रेस से यात्रा करने के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा। चोपन से टनकपुर तक चलने वाली त्रिवेणी फिलहाल शक्तिनगर व सिगरौली नहीं जाएगी। चोपन से सिगरौली व शक्तिनगर के बीच रेलवे लाइन के निर्माण का कार्य अभी भी चल रहा है। पूरे फरवरी माह तक इन दोनों जगहों पर त्रिवेणी का ठहराव न होने से क्षेत्रीय लोगों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। यातायात निरीक्षक रेलवे अनिल कुमार ने बताया कि मार्च तक त्रिवेणी का संचालन सिगरौली व शक्तिनगर में नहीं होगा। त्रिवेणी एक्सप्रेस को मार्च महीने में भी चोपन तक ही सीमित रखने का निर्णय लिया गया है। रेलवे की ओर से जारी आदेश के मुताबिक गाड़ी संख्या 15074 टनकपुर-सिगरौली एक्सप्रेस प्रत्येक सोमवार, बुधवार व शुक्रवार को चोपन तक आएगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 15073 सिगरौली-टनकपुर एक्सप्रेस मंगलवार, गुरुवार व शनिवार को चोपन रेलवे स्टेशन से टनकपुर के लिए रवाना होगी। रेलवे से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक गाड़ी संख्या 15076 टनकपुर-शक्तिनगर एक्सप्रेस प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार, शनिवार व रविवार को चोपन तक आएगी। गाड़ी संख्या 15075 शक्तिनगर-टनकपुर एक्सप्रेस प्रत्येक सोमवार, बुधवार, शुक्रवार व रविवार को चोपन से टनकपुर के लिए प्रस्थान करेगी। यह क्रम पूरे मार्च महीने तक जारी रहेगा। रेलवे लाइन का निर्माण पूर्ण होने के बाद ही शक्तिनगर व सिगरौली के लिए त्रिवेणी के लिए सेवा शुरू हो सकेगी। उम्मीद जताई जा रही है कि मार्च तक रेलवे ट्रैक का कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। चोपन से सिगरौली, शक्तिनगर के बीच रेलवे ट्रैक का कार्य चलने के कारण ट्रेन परिचालन सेवा बाधित हुई है। इससे यात्रियों को कठिनाइयां झेलनी पड़ रही है।

प्रियंका ने कहा कि चुनाव जीतने के लिए जाती धर्म का सहारा लेरही है

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र। आमसभा में श्रीमती प्रियंका गांधी का ओजस्वी वक्तव्य, विरोधी दलों पर बोला जमकर हमला कांग्रेस के स्टार प्रचारक छत्तीसगढ़ के खाद्य व संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत भी थे मौजूद साथ ही साथ ओबरा प्रत्यासी रामराज गोंड, रॉबर्ट्सगंज प्रत्यासी, कमलेश ओझा,दुध्धि की प्रत्यासी श्री मति बसंती पनिका के पक्ष में मतदान की अपील की गई आज ओबरा में आयोजित आमसभा में श्रीमती प्रियंका गांधी ने जातिवादी एवं साम्प्रदायिक राजनीति पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि विरोधी दल चुनाव जीतने के लिए जाति-धर्मवादी राजनीति करते हैं, जनता के मुद्दों पर बात नहीं करते। महँगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याओं को काबू करने में नाकाम भाजपा सरकार को श्रीमती प्रियंका गांधी आड़े हाथों लिया। उन्होंने पेट्रोल-डीजल, सरसों तेल, राशन की आसमान छूती कीमतों, रोजगार जैसे आम लोगों से जुड़े मुद्दों पर अपनी बात रखी। आदिवासियों,

जनजातियों की बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं, उन्हें जंगल पर जो अधिकार दिए गए थे वो कांग्रेस की सरकारों ने दिए, लेकिन आज उनका हक रहा नहीं। जहाँ आदिवासी पुश्तों से रह रहे हैं वहाँ से उन्हें बुलडोजर के बल पर हटाया जा रहा है श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा इस अवसर छत्तीसगढ़ के आदिवासी नेता कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत भी मौजूद थे। उन्होंने भी महँगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याओं को नियंत्रित न कर पाने के कारण भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा अन्य विपक्षी दलों ने जाति-धर्म की राजनीति में लोगों को उलझाकर मुख्य मुद्दों से जनता को दूर कर दिया है। मंत्री अमरजीत भगत ने किसान और अर्थव्यस्था जैसे मुद्दों पर भाजपा को घेरते हुए कांग्रेस की उपलब्धियाँ गिनाईं। उन्होंने कहा कि भाजपा ने किसानों के हित के नाम पर जुमलेबाज़ी की है। कांग्रेस ने सही मायनों में किसानों के लिए काम किया है। छत्तीसगढ़ में किसानों के हित के लिए कई योजनाएँ बनाईं, किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में कार्य किए। साथ ही उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में किसानों की आय बढ़ाने के लिए कांग्रेस के पास स्पष्ट व ठोस योजनाएँ हैं। गौरतलब है कि मंत्री अमरजीत भगत को उत्तरप्रदेश चुनाव में स्टार प्रचारक बनाया गया है। वे लगातार सोनभद्र जिले के प्रत्याशियों के लिए सघन प्रचार कर रहे हैं। इस क्षेत्र में चुनाव 7 तारीख को आखिरी चरण में होने हैं।आज ओबरा में हुई इस आमसभा में छत्तीसगढ़ के स्कूली शिक्षा मंत्री प्रेमसाय सिंह टेकाम, उद्योग मंत्री कवासी लखमा, सामरी विधायक चिंतामणि महाराज, लुंड्रा विधायक डॉ. प्रीतम राम, बलरामपुर विधायक बृहस्पति सिंह, बिलाईगढ़ विधायक चंद्रदेवराय एवं सोनभद्र जिला कांग्रेस अध्यक्ष फरीद खान, धीरज पांडेय,अमित चतुर्वेदी,कौशलेश पाठक, राजीव तिवारी,आकाश वर्मा, के व जिला शहर के पदाधिकारी भी मौजूद थे।।

बढ़ौली-कुसाही पेयजल परियोजना पर उठे सवाल

सोनभद्र। बढ़ौली कुसाही पेयजल परियोजना पर सवाल उठ रहें हैं। यह परियोजना राब?ट्र्सगंज ब्लाक के बढ़ौली गांव में स्थित है। इस परियोजना से ज्यादातर गांवों को पानी नहीं मिल पा रहा है। इसका खामियाजा आम जनता को भुगतान पड़ रहा है। 156 गांवों को परियोजना से करनी थी पेयजल की आपूर्ति लेकिन ऐसा नहीं हो सका। महज 25 से 30 गांव में ही लोगों को पानी मिल पा रहा है। इससे पेयजल संकट बढ़ने के आसार हैं। पेयजल न मिलने से आक्रोशित लोगों ने कई बार जल निगम कार्यालय व डीएम कार्यालय पर धरना- प्रदर्शन किया लेकिन यहां की व्यवस्था अब तक नहीं सुधरी। परियोजना से जुड़े लोगों को दिनभर में एक बार ही पानी मिल पा रहा है। इससे लोगों में असंतोष है। बढ़ौली कुसाही पेयजल परियोजना बनाने का उद्देश्य था कि आसपास के ग्रामीणों को

शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हो और लोग जल जनित रोगों से निजात पा सके। इसके तहत 156 गांवों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति करनी थी। शुरूआत के दिनों में तो यह योजना काफी अच्छी चली और लोगों को समय से पानी भी दो बार मिलता था लेकिन धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ती चली गई। फिर कभी बिजली की कटौती तो कभी अन्य तकनीकी कारणों से पानी की आपूर्ति होती थी। कई बार जल निगम के बढौली गांव स्थित कार्यालय के साथ ही कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन भी किया गया। इसके बाद परियोजना के संचालन में आने वाली बिजली की समस्या दूर हो गई और यहां परियोजना के लिए अलग से एक ट्रांसफार्मर बैठा दिया गया। इसके बावजूद पानी की समस्या अब भी बनी हुई है। अब तो पिछले काफी दिनों से दिनभर में एक बार ही पानी की आपूर्ति हो रही है। कई जगहों पर पुरानी पाइप लाइन भी क्षतिग्रस्त है जिससे लोगों के घरों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। क्षेत्र के इकबाल अहमद, शत्रुंजय मिश्र, जय प्रकाश, मुकेश कुमार, राधेश्याम आदि का कहना है कि अब बमुश्किल ही पानी की आपूर्ति हो रही है। गर्मी का दिन आ गया है। ऐसे में हैंडपंप भी पानी देना बंद कर देंगे तो बढ़ौली कुसाही परियोजना से एक टाइम पानी मिलने से काम नहीं चल पाएगा। उन्होंने सभी गांवों में शुद्ध पेयजल आपूर्ति की मांग की है। उधर विभाग के अधिशासी अभियंता महेंद्र सिंह से कई बार बात करने का प्रयास किया गया लेकिन उनका मोबाइल रिसीव नहीं हुआ।

विद्यापति की रचना का ध्रुपद शैली में गायन, श्रोता विभोर

डाला (सोनभद्र)। श्रीअचलेश्वर महादेव मंदिर फाउंडेशन के तत्वावधान में मंगलवार की देर शाम महाशिवरात्रि पर ध्रुपद रजनी संगीत समारोह का वार्षिक आयोजन किया गया। इसमें ध्रुपद कलाकार संजीव झा व मनीष कुमार ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को विभोर किया। अचलेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में आयोजित संगीत समारोह में हलद्वानी से पधारे कलाकार हृदयेश चोपड़ा ने पखावज और तानपुरा पर सोनभद्र की रुद्राक्षी तिवारी ने संगत की। वर्ष 2005 से आयोजित ध्रुपद रजनी में देश-प्रदेश के सुविख्यात कलाकार उस्ताद सईदुद्दीन डागर, पंडित उदय

भवालकर, पंडित गुंदेचा बंधु और उस्ताद अफ़ाल हुसैन जैसे नामचीन कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी है। ध्रुपद रजनी की शुरूआत संजीव झा और मनीष कुमार ने राग मालकौश में की। आलाप, जोड़, झाला के बाद पारंपरिक बंदिशें प्रस्तुत की, जो चौताल और सूल-ताल में निबद्ध थी। राग चंद्रकौश में स्वरचित बंदिश हे शिवशंकर, गंगधर सतिवर, गणनाथ भूतपति, जय अचलेश्वर का आयोजन विशेष प्रस्तुति थी। दोनों ध्रुपद कलाकारों ने विद्यापति के पद को पहली बार ध्रुपद शैली में प्रस्तुत किया। कखन हरब दुख मोर को राग चारुकेशी और ताल तीव्रा में और जय-जय भरवि को राग भैरवी और सूलताल में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अचलेश्वर महादेव मंदिर के महंत पं. मुरली तिवारी, विधाशंकर पांडेय व राजेश द्विवेदी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। संचालन चंद्र किरण तिवारी ने किया। गौरतलब है कि शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए शासन स्तर से भी ठोस व कारगर प्रयास किए जा रहे हैं। इस क्रम में स्कूलों में संगीत के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जहां नई पीढ़ी को संगीत की बारीकियां सिखाई जा रहीं हैं।

यूक्रेनी सेना ने ट्रेन में नहीं बैठने दिया भारतीय छात्रों को

ओबरा (सोनभद्र)। रूस की सीमा के पास मौजूद यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव में बुधवार को स्थिति और विस्फोटक हो गई। विदेश मंत्रालय की एडवाइजरी के बाद रेलवे स्टेशन पर पहुंचे भारतीय छात्रों को ट्रेनों में नहीं बैठने दिया गया। यूक्रेन की सेना ने स्टेशन से निकली कुल तीन ट्रेनों में केवल स्थानीय नागरिकों को ही जाने दिया। इस दौरान छात्रों के साथ यूक्रेनी सेना ने दुर्व्यवहार भी किया। खारकीव में फंसे ओबरा के अक्षत गुप्ता ने बताया कि भयावह माहौल में वे लोग पैदल किसी तरह रेलवे स्टेशन पहुंचे थे लेकिन यूक्रेनी सेना ने हमें ट्रेनों में नहीं बैठने दिया। कई छात्रों के साथ बदसलूकी भी की गई। इसके बाद विदेश मंत्रालय को जब इसकी सूचना दी गई तो मंत्रालय की ओर से लगभग 10 से 12 किलोमीटर परिधि में तीन अन्य जगहों तक पैदल पहुंचने को कहा गया। शाम तक कर्फ्यू लगने को देखते हुए सभी पैदल ही उक्त स्थानों के लिए रवाना हो गए। अक्षत के पिता अनिल गुप्ता ने अंतिम बातचीत के आधार पर बताया कि बच्चों ने सेना से काफी विनती की लेकिन सेना को जैसे कोई आदेश दिया गया था, जिसके कारण उन लोगों ने भारतीय छात्रों को ट्रेनों में बैठने नहीं दिया। काफी भावुक हुए अनिल गुप्ता और उनकी पतनी पिकी गुप्ता लगातार रोने लग रहे हैं। खारकीव में बने हालात को देखते हुए वे अब भगवान के भरोसे हैं। दरअसल, विदेश मंत्रालय की ओर से भारतीय नागरिकों को किसी भी तरह खारकीव छोड़ने का निर्देश दिया गया है। इसके बाद बंकर में मौजूद छात्र बुधवार सुबह ही रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए थे। यहां पहुंचने के बाद यूक्रेन की सेना के रवैये के कारण छात्र मायूस हो गए।

शिक्षक साइबर क्राइम का शिकार, खाते से निकाले 96 हजार

राजगढ़ (मीरजापुर)। क्षेत्र के धनसिरिया गांव निवासी अध्यापक साइबर क्राइम के शिकार हो गए। मंगलवार को आनलाइन बुकिंग करते समय ठग ने दो बार में खाते से 96 हजार रुपये निकाल लिए। मोबाइल पर मैसेज आते ही पीड़ित अध्यापक के होश उड़ गए और खाते को बंद कराने के साथ ही चौकी में तहरीर दी। उन्होंने साइबर सेल में तहरीर देकर रुपये दिलाने गुहार लगाई है। गांव निवासी सतीश कुमार सिंह राजगढ़ के खटखरिया स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक हैं। मंगलवार को वह अपने 10 वर्षीय पुत्र के सहयोग से आनलाइन सामान की बुकिंग करा रहे थे। उसी समय बैंक मैनेजर बन कर एक व्यक्ति ने मोबाइल पर फोन किया। इसके बाद क्रेडिट कार्ड नंबर के अलावा आधार कार्ड संख्या, मोबाइल और ओटीपी नंबर पूछा। सतीश ने उसे बैंक मैनेजर समझकर पूरी डिटेल दे दी। इसके बाद उनके खाते से दो बार में 96302 रुपये निकाल लिए। रुपये निकलने का मैसेज मोबाइल पर आते ही अध्यापक के होश उड़ गए। तत्काल राजगढ़ स्थित स्टेट बैंक पहुंचकर मैनेजर से पूछताछ कर संचालित क्रेडिट कार्ड को वह बंद कराए। मैनेजर ने पीड़ित को मीरजापुर स्थित साइबर सेल जाने की सलाह दी।

300यूनिट फ्री बिजली के अलावा शिक्षा क्षेत्र में होंगी बम्पर भर्ती

स्वास्थ्य सेवा होगा बेहतर तथा पुलिस को किया जाएगा मजबूत

(आधुनिक समाचार सेवा)
चिन्ता पान्डेय

सोनभद्र। हाइडिल मैदान में आज समाजवादी पार्टी के कार्यक्रम के दौरान पुख्ता इंतजाम होने के बावजूद भी कार्यकर्ताओं द्वारा

बैरिकेडिंग थोड कर अखेले याद कि गाड़ी के पास पहुंचे प्रशासन के पुख्ता इंतजाम होने के कारण कोई घटना नहीं हुई मंच से बार बार मना करने पर भी कार्यकर्ताओं द्वारा बैरिकेडिंग तोड़ने का प्रयास किया गया पुर्व मुख्यमंत्री अखलेश यादव ने कहा कि पांच सालों में इस सरकार द्वारा कोई काम नहीं किया गया नवयुवकों को न तो नौकरी मिली ना ही पुलिस कि भर्ती ही कि हुई जिस कारण बेचारे नव युवक न तो शादी का लड्डु खां पारहे न ही खिला पारहे है अखेलश याद ने कहा कि मेरे द्वारा सुरू कि गई एम्बुलेंस का आज बुरा हाल है उसका सही उपयोग नहीं हो रहा है यही नहीं मेरे द्वारा 100नम्बर को जब से 112नम्बर कि या है पुलिस भी अब खराब हो गई है उन्होंने ने एक भी उधोग पतियों ने कोई कारखाना नहीं खड़ा किया जिस बिजेपी ने उन्होंने ने काह बम्म और मिसाइल बनाने वाले ने माचीस कि तीली भी नहीं बनाई सोनभद्र में अगर लम्बी सड़क बनाई तो केवल समाजवादीयो ने बनाया अखलेश यादव ने कहा अगर समाजवादी कि पार्टी बनती है तो सेना भी भर्ती निकाली जाएगी और जरूरत पड़ने पर उभर में भी छुट दी जाएगी 24घन्टे बिजली देने और तीन युनीट फ्रिरी बिजली भी देने का काम समाजवादी पार्टी करेगी समाजवादी पार्टी कि अगर सरकार बनेगी तो सबसे पहले लोहीया वाहिनी आवास देने का काम सबसे पहले सोनभद्र जिले से कि जाएगी पांच साल फ्रिरी रासन दिया जाएगा राशन के साथ एक घि,एक तेले और ,एक किलो दुध पावडर, एक किलो चीनी भी दिया जाएगा समाजवादी बडा कर 5,00से 15,00सो दीया जाएगा साथ ही टिचरो कि भर्ती कि जाएगी साथ ही पांच साल से गुम रहे घुम रहे उन रसोई का भी ख्याल रखा जाएगा अखलेश यादव ने कहा बीजेपी के छोटे नेता छोटा छुट बोलते हैं बड़े बड़ा छुट बोलते और जो उसे बड़े है उसे बड़ा छुट बोलते है हमारी सरकार बनने पर ट्रामा सेंटर बनाने का काम किया जाएगा चाहे उसके लिए कितने भी बजट पास करना पडे तो किया जाएगा

पेपर लीक होने से परीक्षा स्थगित

अनपरा (सोनभद्र)। डीएवी बोर्ड की ओर से शुरू हुई कक्षा

आठ एवं 11वीं की परीक्षा पेपर लीक होने से स्थगित कर दी गई है। बुधवार को कक्षा आठ के परीक्षार्थी परीक्षा देने विद्यालय गए थे। इसी दौरान बोर्ड से निर्देश आया कि कही पेपर लीक हो गया है। इसके बाद परीक्षा स्थगित कर दी गई होली के बाद परीक्षा आयोजित की जाएगी। इस संदर्भ में प्रधानाचार्य कुछ भी कहने में असमर्थ रहे। उनका कहना है कि केवल परीक्षा अभी टालने का निर्देश बोर्ड की ओर से मिला है कुछ चर्चाएं इस बिदु पर जारी रही कि मध्यप्रदेश स्थित किसी विद्यालय में पेपर लीक होने की सूचना बोर्ड को मिली थी। जिस पर बोर्ड ने आनन-फानन में दर्जनों विद्यालयों की परीक्षा निरस्त कर दी। डीएवी बोर्ड की ओर से पेपर लिक के माध्यम से भेजा जाता है। जिसे कहीं प्रिट करने के दौरान पेपर लीक होने की बात सामने आ रही है। परीक्षा निरस्त होने से परीक्षार्थी मायूस होकर अपने घर लौट गए।

चौकी क्षेत्र अंतर्गत निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली

(आधुनिक समाचार सेव)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला(सोनभद्र)। आज गुरुवार शाम नगर में डाला चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ठाकुर के नेतृत्व में पुलिस चौकी मुख्य द्वार से मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई जिसमें

अनेकों स्थानीयो ने प्रतिभाग किया और सभी से अधिक से अधिक मतदान करने हेतु आग्रह किया। इस दौरान डाला पुलिस और नगर के अनेकों सम्मानित नागरिकों ने हाथ में मतदाता जागरूकता की तख्तियां लेकर पूरे नगर का भ्रमण किया और नगरवासियों को मतदान करने के लिए प्रेरित किया। चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ठाकुर के निर्देशन में पूरा नगर घूमते हुए स्थानीय पुलिस चौकी प्रांगण में आकर रैली का समापन कर दिया गया। इस दौरान रैली में डाला नवनिर्माण सेना से छात्र नेता अनिकेत श्रीवास्तव,अमृत कुमार पटेल उर्फ़ अंशु,राकेश पासवान,गोविंद भारद्वाज,व्यापार मंडल अध्यक्ष मुकेश जैन,पप्पू सिंह,हनुमान सिंह,भैरव जायसवाल,श्रीनिवास दुबे,उत्तम मिश्रा, व डाला पुलिस अशोक कुमार, रविकांत, रविकांत यादव, दीपक कुमार वर्मा, परमेंद्र राय, महेंद्र यादव लोग शामिल रहे

5.67 लाख टन कोयला उत्पादन एक दिन में कर एनसीएल ने बनाया इतिहास

अनपरा (सोनभद्र)। एनसीएल ने मंगलवार को एक दिन में 5.67 लाख टन कोयला उत्पादन कर एक नया इतिहास बनाया। यह उत्पादन कंपनी के स्थापना से लेकर अबतक किसी एक दिन में किया गया सर्वाधिक उत्पादन है। इस उपलब्धि में कंपनी की जयंत एवं निगाही परियोजनाओं का अहम योगदान रहा। दोनों परियोजनाओं ने मंगलवार को 1-1 लाख टन से अधिक कोयला उत्पादन किया। कंपनी की इस विशिष्ट उपलब्धि पर सीएमडी एनसीएल भोला सिंह, निदेशक डा. अनिद्य सिन्हा, राम नारायण दुबे, एसएस सिन्हा ने कर्मियों को बधाई दी है। सीएमडी ने कहा कि एनसीएल के लिए यह एक महत्वपूर्ण दिन है। सफलता का श्रेय एनसीएल कर्मियों को दिया। कहा कि टीम एनसीएल में असीमित क्षमता है। टीम भावना की बदौलत ही कंपनी आगे भी बड़ा लक्ष्य हासिल करती रहेगी। खदान सुरक्षा, पर्यावरण संतुलन एवं कोयला गुणवत्ता पर विशेष बल देते हुए राष्ट्र हित में कोयला उत्पादन कर ऊर्जा सुरक्षा में कंपनी की भागीदारी निभाने का आह्वान किया। जयंत परियोजना को वित्तीय वर्ष 2021-22 में 22 मिलियन टन कोयला उत्पादन करने का लक्ष्य दिया गया था जिसे परियोजना ने समय रहते 16.34 फीसदी वार्षिक वृद्धि के साथ पूरा कर लिया। इससे पहले ककरी एवं झिगुरदा परियोजनाओं ने भी क्रमशः 2 एवं 2.03 मिलियन टन वार्षिक उत्पादन लक्ष्य को पूरा कर लिया था। चालू वित्त वर्ष में एनसीएल के 119 मिलियन टन कोयला उत्पादन लक्ष्य का पीछा करते हुए कंपनी ने अभी तक 6 फीसद वृद्धि के साथ 110.51 मिलियन टन उत्पादन कर लिया है। कोयला प्रेषण में भी 16.37 फीसद वार्षिक वृद्धि के साथ लगभग 114.74 मिलियन टन कोयला बिजली घरों सहित सभी ग्राहकों को भेजा है।

सड़क हादसों में चार लोग घायल

घोरावल (सोनभद्र)। बीते 24 घंटों में अलग- अलग सड़क हादसों में चार लोग घायल हो गए। बुधवार को घोरावल कस्बे में शिवद्वार मार्ग पर दो बाइकों की भिड़ंत में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। बाइक से गिरकर सूरज विश्वकर्मा (20) पुत्र झुन्नू निवासी टेंगराही थाना पड़री जनपद मीरजापुर घायल हो गए। उसके सिर में गंभीर चोट आई है। उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है, जहां उपचार चल रहा है। एक अन्य घटना में मंगलवार की रात केवली गांव में बाइक के धक्के से बसही निवासी अरविद (28), बाइक सवार मिर्जापुर के अहरौरा थाना क्षेत्र के सेमरा निवासी उमाशंकर (20) व शिवकुमार (22) घायल हो गए। पुलिस ने सभी घायलों को घोरावल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया।

विराट कोहली का 100वां टेस्ट देखने के लिए BCCI अध्यक्ष ने कैंसिल की छुट्टी, लंदन से लौटेंगे

नई दिल्ली। लाखों फैंस की मांग के बाद आखिरकार मोहाली टेस्ट में दर्शकों को आने की अनुमति मिल ही गई और अब वे पूर्व कप्तान के ऐतिहासिक मैच में उन्हें बल्लेबाजी करते देख सकेंगे। लेकिन इस बीच बीसीसीआइ के अध्यक्ष सौरव गांगुली ने वादा किया है कि वो भी विराट के 100वें टेस्ट में पीसीए स्टेडियम में मौजूद रहेंगे। हिंदुस्तान टाइम्स से बात करते हुए गांगुली ने ये वादा किया। फिलहाल वो अपने परिवार के साथ लंदन में छुट्टियां मनाने गए हैं। लेकिन इस बीच उन्होंने फैसला किया कि वो विराट के ऐतिहासिक मैच में मौजूद रहेंगे। पिछले सात सालों में ऐसा पहली बार होगा जब कोहली टेस्ट में एक समान्य खिलाड़ी के तौर पर उतरेंगे। कोहली ने पिछले महीने टेस्ट की कप्तानी, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 1-2 से सीरीज हारने के बाद छोड़ दी थी। बातचीत के दौरान गांगुली ने 33 साल के विराट कोहली की तारीफ की जिन्होंने लगभग 10 साल से क्रिकेट की दुनिया में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है। गांगुली ने कहा कि दिल्ली के इस बल्लेबाज के लिए 100 टेस्ट मैच खेलने वाले खिलाडियों की ग्रुप में शामिल होना एक बेहतरीन उपलब्धि है। उनकी उपलब्धि पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनके लिए ये उपलब्धि इसलिए भी बड़ी है क्योंकि कुछ ही खिलाड़ी हैं जो इस सूची में शामिल हो पाए हैं। कोहली अपने इस ऐतिहासिक टेस्ट मैच को यादगार बनाना चाहेंगे। यदि कोहली इस टेस्ट में संेचुरी लगा पाते हैं तो वे भारत की तरफ से ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बन जाएंगे जिन्होंने 100वें टेस्ट में ये कारनामा किया हो। वर्ल्ड क्रिकेट की बात करें तो केवल 9 बल्लेबाज ये कारनामा कर पाए हैं। एशिया की बात करें तो जावेद मियांदाद और इंजमाम-उल-हक ये कारनामा कर चुके हैं। इसके अलावा कोहली इस मैच में 8,000 रन पूरा कर सकते हैं। 8,000 रन पूरा करने के लिए उन्हें केवल 38 रनों की जरुरत है।

फार्म में लौटी हरमनप्रीत कौर ने टीम के इस सदस्य को दिया श्रेय

क्राइस्टचर्च। भारतीय उप कप्तान हरमनप्रीत कौर ने बुधवार को रहस्योद्घाटन किया कि रन नहीं बना पाने के कारण वह गुमसुम होती जा रही थीं, लेकिन टीम की मनोचिकित्सक मुग्धा बावरे ने आइसीसी महिला वनडे क्रिकेट विश्व कप से पहले उन्हें खोई फार्म हासिल करने में बहुत मदद पहुंचाई। बावरे टीम के साथ न्यूजीलैंड दौरे पर गई हैं जहां शुक्रवार से वनडे विश्व कप खेला जाना है। यह पहला अवसर है, जबकि भारतीय टीम के साथ खेल मनोचिकित्सक भी दौरे पर है। हरमनप्रीत ने कहा, 'मुग्धा मैडम हमारे साथ दौरा कर रही हैं और उन्होंने काफी मदद की विशेषकर पिछले चार मैचों में जो हमने न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले थे और जिनमें मेरा प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। मैं तब गुमसुम हो गई थी, क्योंकि विश्व कप पास में था। उनसे बात करने के बाद मुझे लगा कि असल में मुझे इसकी जरूरत थी। मेरे दिमाग में कई चीजें चल रही थीं और मैं उनसे वाकिफ नहीं थी क्योंकि काफी दबाव था, लेकिन उनसे बात करने के बाद मुझे समाधान मिल गया। उनसे बात करने के बाद मेरी राय स्पष्ट हो गई। पिछले दो-तीन मैचों में इन चीजों से वास्तव में मदद मिली। मुझे पूरा विश्वास है कि टीम को भी उनके साथ में होने का फायदा मिल रहा है क्योंकि मैं देखती हूं कि वह लगातार सभी खिलाड़ियों से बात करती रहती हैं जो कि महत्वपूर्ण है और इससे निश्चित तौर पर हमें मदद मिलेगी। बावरे राष्ट्रीय स्तर की पूर्व तैराक हैं।

BCCI ने जारी किया सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट हार्दिक पांड्या, पुजारा समेत इन खिलाडियों को हुआ नुकसान

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने अपने सालाना करार की घोषणा कर दी है। बीसीसीआई ने बुधवार को जो लिस्ट जारी की है उसमें टॉप ग्रेड में में कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली के साथ तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह मौजूद हैं। टेस्ट टीम के बाहर किए गए चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे को नुकसान हुआ है। कुल 28 खिलाडियों को इस साल के करार के लिए बीसीसीआई की तरफ से चुना गया है। आल इंडिया सीनियर सलेक्शन कमेटी द्वारा की गई सिफारिश के आधार पर बोर्ड ने खिलाडियों को रिटेंशन की लिस्ट जारी की है। सभी खिलाडियों का यह करार 1 अक्टूबर 2021 से सितंबर 2022 के लिए है। ए प्लस ग्रेड में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं किया गया है जबकि बी ग्रेड में 10 खिलाडियों की संख्या को कम करते आधा करते हुए 5 कर दिया गया है। ग्रेड बी में की संख्या का 5 से बढ़ाकर इस साल 7 कर दिया गया है। वहीं सी ग्रेड में 10 की जगह पर 12 खिलाडियों को जगह दी गई है। बीसीसीआइ द्वारा जारी करार में से स्पिनर कुलदीप यादव और तेज गेंदबाज नवदीप सैनी का नाम हटा दिया गया है। मोहम्मद सिराज को उनके बेहतर प्रदर्शन का इनाम सी ग्रेड से बी में प्रमोशन के तौर पर मिला है। शिखर धवन, हार्दिक पांड्या और इशांत शर्मा को ए ग्रेड से सी ग्रेड में डाल दिया गया है जबकि भुवनेश्वर कुमार, उमेश यादव, मयंक अग्रवाल और रिद्धिमान साहा को बी से सी ग्रेड में डिमोट किया गया है। ग्रेड ए+ विराट कोहली, रोहित शर्मा, जसप्रीत बुमराह ग्रेड ए आर अश्विन, रवींद्र जडेजा, केएल राहुल, मोहम्मद शमी, रिषभ पंत ग्रेड बी चेतेश्वर पुजारा, अजिंक्य रहाणे, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, श्रेयस अय्यर, मोहम्मद सिराज, इशांत शर्मा ग्रेड सी शिखर धवन, उमेश यादव, भुवनेश्वर कुमार, हार्दिक पांड्या, वाशिंग्टन सुंदर, दीपक चाहर, शुभमन गिल, हनुमा विहारी, युजवेंद्र चहल, सूर्यकुमार यादव, रिद्धिमान साहा, मयंक अग्रवाल ग्रेड में शामिल किए जाने वाले खिलाडियों को सैलरी के तौर पर सालाना 7 करोड़ रुपए मिलते हैं। वहीं और ग्रेड के खिलाडियों को क्रमशः 5, 3 और 1 करोड़ रुपए पूरे एक साल के सैलरी के तौर पर दिए जाते हैं।

टाप 10 से बाहर हुए रोहित और कोहली, श्रेयस की रैंकिंग में हुआ सुधार

नई दिल्ली। टीम इंडिया के बल्लेबाज श्रेयर अय्यर ने आइसीसी की रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई है। आइसीसी की ताजा टी20 बल्लेबाजों की रैंकिग में श्रेयस 18वें स्थान पर पहुंच गए हैं और उन्होंने 27 स्थानों की छलांग लगाई है। अय्यर की रैंकिंग में ये सुधार हालिया श्रीलंका टी20 सीरीज में शानदार बल्लेबाजी करने के बाद हुई है। हालिया टी20 सीरीज में टीम इंडिया ने श्रीलंका को 3-0 से हराया था। इंडिया की इस जीत में अय्यर का महत्वपूर्ण योगदान था। वे तीनों टी20 मैचों में नाबाद रहे थे और फिनिशर की रोल में नजर आए थे। उन्होंने 174 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए सीरीज में 204 रन बनाए थे जो 3 मैचों की टी20 सीरीज में किसी भी भारतीय बल्लेबाज द्वारा बनाया गया सर्वाधिक रन है। अय्यर ने पहले टी20 मैच में 57 रन, दूसरे टी20 मैच में 74 रन और तीसरे टी20 मैच में 73 रन का योगदान दिया था। मौजूदा समय में अय्यर शानदार लय में नजर आ रहे हैं। आइपीएल 2022 में अय्यर कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान बनाए गए हैं। ऐसे में उनके फार्म का फायदा उनकी टीम कोलकाता नाइट राइडर्स को भी जरूर मिलेगा। केएल राहुल की बात करें तो उनकी रैंकिंग नीचे आई है और वो 4 स्थान नीचे यानि 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

विकेटकीपर दिनेश कार्तिक ने कहा टेस्ट कप्तान के तौर पर देश ही नहीं वर्ल्ड क्रिकेट के लिए विराट ने छोड़ी है विरासत

नई दिल्ली। भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने विराट कोहली के 100वें टेस्ट मैच से पहले कहा है कि उन्होंने केवल भारत ही नहीं वर्ल्ड क्रिकेट के लिए टेस्ट कप्तान के रूप में एक स्थायी विरासत छोड़ी है। पिछले महीने विराट ने टेस्ट कप्तानी छोड़ दी थी। इसके बाद रोहित शर्मा को टेस्ट कप्तानी सौंप दी गई थी। श्रीलंका के खिलाफ आगामी मोहाली टेस्ट, कोहली का 100वां टेस्ट होगा, जबकि रोहित टेस्ट में पहली बार टीम की अगुवाई करेंगे मुझे नहीं लगता कि उन्होंन केवल भारतीय क्रिकेट के लिए विरासत छोड़ी है, उन्होंने टेस्ट कप्तान के तौर पर विश्व क्रिकेट के लिए एक विरासत छोड़ी है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से टेस्ट क्रिकेट खेला है वह अभूतपूर्व है। दुनिया इस बात से चकित है कि कैसे विराट इतनी ऊर्जा ला सकते हैं। दुनिया भर के लोगों ने इसका लुत्फ उठाया है। मुझे लगता है कि कोहली ने फिटनेस को एक अलग लेवल पर पहुंचाया है और इसे अनिवार्य बनाया है। लोगों ने उसका पालन किया है और आप देख सकते हैं कि फिल्डिंग का स्तर दो पायदान ऊपर चला गया है कोहली ने पहली बार टेस्ट में भारत की कप्तानी आस्ट्रेलिया के खिलाफ 2014 में की थी जबकि कप्तान के तौर पर उनके आखिरी टेस्ट की बात करें तो दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेला गया केपटाउन टेस्ट मैच था। इस मैच में भारत को 7 विकेट से हार मिली थी। महेंद्र सिंह धोनी ने जब टेस्ट कप्तानी छोड़ी थी तो उनके सफर को आगे बढ़ाना इतना आसान नहीं था लेकिन कोहली ने बहुत कम समय में इसे अपना लिया और अब वो टेस्ट में भारत के सबसे सफल कप्तान के तौर पर अपनी विरासत छोड़ी है।

100वें टेस्ट से पहले मुश्किल में दिखे विराट कोहली, प्रैक्टिस के दौरान 6 बार हुए बोल्ड

मोहाली। एक, दो, तीन.. नहीं सात बार विराट कोहली बुधवार को नेट अभ्यास में आउट हुए। इसमें छह बार बोल्ड हुए और एक बार गेंदबाज ने उन्हें पगबाधा किया। श्रीलंका के खिलाफ शुक्रवार को मोहाली के आइएस बिंद्रा स्टेडियम में वह अपना 100वां टेस्ट खेलेंगे और उनसे उम्मीद लगाई जा रही है कि वह इस मैच में दो साल से चला आ रहा शतकों का सूखा खत्म करेंगे। हालांकि उनकी फार्म कुछ और ही इशारा कर रही है। टीम इंडिया को गुरुवार को भी अभ्यास करना है और विराट उसमें कुछ अच्छा प्रदर्शन करके अपना आत्मविश्वास वापस पा सकते हैं। विराट 70 अंतरराष्ट्रीय शतक जड़ चुके हैं, लेकिन उन्होंने पिछली 70 अंतरराष्ट्रीय पारियों में कोई शतक नहीं जड़ा है। खास बात यह है कि 70 खिलाड़ी ही अब तक 100 टेस्ट खेल पाए हैं। मोहाली में सारा फोकस विराट पर था। विराट ने दो तो रोहित ने तीन सत्रों में अभ्यास किया। जहां एक ओर नए टेस्ट कप्तान पूरे टच में दिख रहे थे तो वहीं पूर्व कप्तान के फुटवर्क में दिक्कत नजर आ रही थी। अगर विराट की बात की जाए तो उनका दिन कुछ खास नहीं गया। मुहम्मद सिराज, रवींद्र जडेजा, सौरभ कुमार, रविचंद्रन अश्विन ने उन्हें एक-एक बार बोल्ड किया। बायें हाथ के स्पिनर ने उन्हें दो बार बोल्ड और एक बार पगबाधा किया। इस नेट गेंदबाज के लिए यह सपना पूरा होने की तरह था, लेकिन विराट के लिए यह किसी दुस्वपन से कम नहीं था। अगर उन्हें दो साल से चला आ रहा शतकों का सूखा खत्म करना है तो श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट में अच्छी बल्लेबाजी करनी होगी। हालांकि ऐसा नहीं है कि विराट ने अच्छे शाट नहीं लगाए। उन्होंने तेज गेंदबाजों, थ्रोडाउन विशेषज्ञ के खिलाफ अच्छे शाट भी लगाए। विराट जिस तरह अभ्यास सत्र में बायें हाथ के स्पिनर के सामने परेशान हो रहे थे उससे श्रीलंका के बायें हाथ के स्पिनर लसित एंबुलडेनिया निश्चित तौर पर खुश हो रहे होंगे। लसित की लंबाई अच्छी है और वह पारंपरिक बायें हाथ के स्पिनर हैं जो ऊंचाई से गेंद को छोड़ते हैं जिससे उन्हें बाउंस मिलता है। वह गेंद को ज्यादा समय तक हवा में रखते हैं और उन्हें रंगना हेराथ के बाद श्रीलंका का भविष्य का स्पिनर माना जा रहा है। उन्होंने इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने घर में काफी विकेट लिए हैं। उन्होंने 2019 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उनके घर में जाकर अपनी पदार्पण सीरीज के एक मैच की एक पारी में पांच विकेट लिए थे। वह टेस्ट सीरीज श्रीलंका ने दक्षिण अफ्रीका में 2-0 से जीती थी। श्रीलंका ऐसा करने वाली पहली एशियाई टीम बनी थी। लसित अब तक 13 टेस्ट में 62 विकेट ले चुके हैं।

टेस्ट कप्तानी के लिए तैयार रोहित शर्मा ने जमकर बहाया पसीना, नेट्स में नजर आए पूरे रंग में

मोहाली। नीले ब्लेजर और सफेद जर्सी में पहली बार टास करने से कुछ घंटे पहले रोहित अपनी बल्लेबाजी को लेकर काफी फोकस नजर आए। उन्होंने पहले बायें नेट पर थ्रोडाउन विशेषज्ञ दयानंद के साथ अभ्यास किया, फिर रवींद्र जडेजा, सौरभ कुमार, मुहम्मद सिराज और मुहम्मद शमी की गेंदों पर बल्लेबाजी की। इसके बाद भी वह नहीं माने और आखिर में तीसरे नेट पर गए जहां पर थ्रोडाउन विशेषज्ञ रघु और नुआन के सामने अभ्यास किया। यहां पर वह शार्ट गेंदों पर अभ्यास कर रहे थे। वहीं उन्होंने सिराज की गेंदों पर कवर ड्राइव लगाए। विराट और रोहित ने अलग-अलग समय अलग नेट पर बल्लेबाजी की। एक समय उप कप्तान रहे रोहित 30 गज की दूरी से पूर्व कप्तान कोहली के अभ्यास पर भी नजर लगाए थे। रोहित ने करीब 45 मिनट तक बल्लेबाजी करने के बाद टीम के अभ्यास सत्र की निगरानी भी की। जब वह बल्लेबाजी कर रहे थे तो कोहली बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौर और रवींद्र जडेजा के साथ बातचीत कर रहे थे। रोहित ने अभ्यास के दौरान जसप्रीत बुमराह की कुछ गेंदों को और शमी की आफ स्टंप से बाहर जाती गेंदों को छोड़ा भी। रोहित ने अभ्यास सत्र के दौरान थ्रोडाउन विशेषज्ञों और स्पिनरों के खिलाफ कई सत्र किए, जो साफ संकेत था कि वह टेस्ट में महज कप्तान नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता बनना चाहते हैं जो खिलाड़ियों के लिए उदाहरण पेश करने में भरोसा रखते हैं। हालांकि पूरे नेट अभ्यास के दौरान पूर्व कप्तान और कप्तान के बीच बातचीत नहीं हुई। कई महीनों बाद श्रीलंका के खिलाफ सीरीज में फिट होकर आए रवींद्र जडेजा जब बल्लेबाजी का अभ्यास कर रहे थे तो जसप्रीत बुमराह की बाउंसर सीधे उनके सिर पर लगी। इस बाउंसर के लगते ही जडेजा ने अपना अभ्यास रोक दिया। वह थोड़ी देर क्रीज पर खड़े रहे। सिर पर चोट लगने की वजह से तुरंत फिजियो नेट पर पहुंच गए और उन्होंने जडेजा को देखा। अभ्यास सत्र के अंत में एक बार फिर जडेजा ने गेंद थामी और गेंदबाजी का अभ्यास किया।

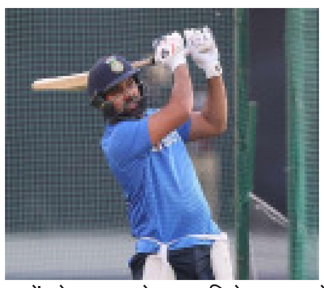

भारत में ऊन पर नहीं दिखाई जाएगी यह सीरीज, जानिए कब और कैसे देखें लाइव.............

नई दिल्ली। बांग्लादेश के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज 1-2 से हारने के बाद अफगानिस्तान की टीम दो मैचों की टी20 सीरीज के लिए पूरी तरह से तैयार है। सीरीज का पहला मुकाबला 3 मार्च को शेर-ए- बांग्ला स्टेडियम ढाका में खेला जाएगा। वनडे सीरीज का आखिरी मैच अफगानिस्तान ने 7 विकेट से जीता था। इससे पहले पहला और दूसरा वनडे मैच बांग्लादेश की टीम ने आसानी से जीत लिया था। पहले मैच में बांग्लादेश ने 4 विकेट से जबकि दूसरे मैच में अफगानिस्तान को 88 रनों से हरा दिया था। यदि आप क्रिकेट के फैन हैं और अफगानिस्तान और बांग्लादेश के बीच इस टी20 सीरीज का आनंद भारत में लेना चाहते हैं तो बता दें कि इसका प्रसारण किसी टीवी चैनल पर नहीं किया जाएगा। लेकिन हम आपको बताएंगे कि कहां और कैसे आप इस मैच को देख सकते हैं भारतीय फैंस इस मैच का आनंद डिजिटल प्लेटफार्म पर ले सकते हैं। भारत में स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म फेनकोड इस मैच का लाइस प्रसारण करेगी। यानि एक बार फिर वनडे की तरह टी20 मैच देखने के लिए भी आपको स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म की मदद लेनी होगी। पहला टी20 मैच 3 मार्च को खेला जाएगा। मैच भारतीय समयनुसार दोपहर 2.30 बजे शुरू होगा।

मोहाली टेस्ट में अश्विन रच सकते हैं इतिहास, कपिल देव को छोड़ सकते हैं पीछे

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच 4 मार्च से मोहाली में शुरू हो रहा पहला टेस्ट कई मायनों में खास है। जहां एक तरफ ये मैच विराट कोहली का 100वां टेस्ट मैच होगा तो वहीं दूसरी तरफ रोहित शर्मा पहली बार टेस्ट कप्तान के तौर पर खेलते नजर आएंगे। लेकिन इन सबके बीच एक रिकार्ड है जो खतरे में होगा और टीम इंडिया के गेंदबाज रविचंद्रन अश्विन सबकी नजर में होंगे। कैरमबाल स्पेशलिस्ट अश्विन इस मैच में आलराउंडर कपिल देव के 434 विकटों के रिकार्ड को पीछे छोड़ सकते हैं। फिलहाल अश्विन के नाम 84 टेस्ट मैचों में 430 विकेट है और वो कपिल देव से महज 4 विकेट पीछ हैं। अश्विन हालिया दक्षिण अफ्रीका दौरे पर नहीं गए थे और अब वे अपनी वापसी को यादगार बनाना चाहेंगे। इसलिए जब श्रीलंका के खिलाफ वे मोहाली में उतरेंगे तो क्रिकेट फैंस की नजर उनकी इस उपलब्धि पर होगी। फिलहाल सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाजों की सूची में अश्विन तीसरे नंबर पर हैं। अनिल कुंबले इस सूची में 619 विकटों के साथ पहले नंबर पर जबकि कपिल देव 434 विकेट के साथ दूसरे नंबर पर हैं। इस बीच आस्ट्रेलिया के बल्लेबाज मार्नस लाबुशाने ने अश्विन की प्रशंसा की है। लाबुशाने ने अश्विन को रिमेंडस थिंकर आफ द गेम बताया है। उन्होंने कहा कि इस कारण से उनके खिलाफ बल्लेबाजी करना मुश्किल होता है। लाबुशाने ने कहा ङ्ख अश्विन का रिकार्ड अच्छा होने के पीछे कारण है कि वो गेम के बारे में बहुत सोचते हैं। वे बल्लेबाज के हर मूव के बारे में सोच कर अपनी प्लानिंग को बदलते हैं। यही कारण है कि वो इतने सफल हैं।

राशिफल

मेष-:आज शांत और तनावमुक्त रहें। आज आप बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं - लेकिन इसे अपने हाथ से जाने न दें।आज आपकी यात्रा सुखद रहेगी।

वृष-:आपका दिन हर्षित और उत्साही मानसिकता के साथ बीतेगा। योजना के अनुसार आपके काम पूरे होंगे। अधूरे काम पूरे होंगे। धन लाभ होने की संभावना है। गृहस्थ जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

मिथुन-:इसे सार्थक कार्य में लगाने के लिए अपनी ऊर्जा बचाएं।अपने परिवार के सदस्यों की भावनाओं को आहत करने से बचने के लिए अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें

कर्क-:आज आपको अपनी मेहनत का बड़ा फायदा मिल सकता है, वो भी इसलिए क्योंकि आप में काबिलियत है और कुछ बेहतर करने का जज्बा भी।

सिंह-:आज आपके परिवार में खुशियों की वृद्धि होगी. संतान की शिक्षा में उन्नति संभव है। माता-पिता का स्वास्थ्य आज बहुत अच्छा रहेगा। उनसे भी आपको पूरा सहयोग मिलने की उम्मीद है

कन्या-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आप अपनी सूझबूझ से सारे काम संभाल लेंगे। नौकरीपेशा लोगों को साथ काम करने वालों से मदद मिलेगी।

तुला-:शरीर के किसी अंग में दर्द होने की संभावना है। ऐसे किसी भी काम से बचें जिसमें बहुत अधिक शारीरिक प्रयास की आवश्यकता हो। पर्याप्त आराम भी करें।

वृश्चिक-: आज आप जो भी काम शुरू करेंगे वो निश्चित रूप से सफल होगा। आत्मचिंतन से आप खुद को नकारात्मकता से दूर रखने में सफल रहेंगे।

धनु-:परिवार के कुछ सदस्य अपने ईर्ष्यालु स्वभाव के कारण आपके लिए झुंझलाहट का कारण बन सकते हैं। लेकिन अपना आपा खोने की जरूरत नहीं है, नहीं तो स्थिति बेकाबू हो सकती है।

मकर-:आपका पारिवारिक जीवन सौहार्दपूर्ण रहेगा। छोटी-छोटी बातों को नकारा नहीं जा सकता। आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और कार्यक्षेत्र में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी।

कुंभ-:आज आपको कारोबार में सफलता मिलेगी. जो आपको गर्व और जोश से भर देगा। इस तरक्की को हासिल करने से आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही कदम उठाए

मीन-:स्वास्थ्य को देखभाल की अत्यधिक आवश्यकता है। प्राप्त धन आपकी अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहेगा। कोई पुराना दोस्त पुरानी यादों को ताजा करने के लिए शाम को फोन कर सकता है।

सम्पादकीय

यूक्रेन संकट से एक बार फिर यही साबित हुआ कि अपने देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो भारत के हित की बात पर भी विरोध में खड़े नजर आते हैं

यूक्रेन में छिड़े युद्ध में प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार की भूमिका पर हमेशा की तरह दो राय हैं। विश्व समुदाय मोदी की ओर उम्मीद से देख रहा है। भीषण संकट में फंसा यूक्रेन कह रहा कि विश्व में मोदी की हैसियत बहुत बड़ी है। वह चाहें तो हल निकल सकता है। घरेलू मोर्चे पर वही चिरपरिचित लोग हैं, जो यूक्रेन संकट में मोदी को खलनायक के रूप में देख रहे हैं। वे चाहते हैं कि भारत अपने सदाबहार मित्र रूस के खिलाफ खड़ा हो और यूक्रेन का साथ दे। मोदी विरोधियों के तर्क हैं कि रूस आक्रमणकारी है और यूक्रेन पीड़ित। रूस अधिनायकवादी है और यूक्रेन जनतांत्रिक। रूस की कार्रवाई एक स्वतंत्र देश की संप्रभुता पर हमला है। ये तीनों बातें ठीक हैं, पर बात यहीं खत्म नहीं होती। आखिर अमेरिका के वियतनाम, इराक, लीबिया, अफगानिस्तान जैसे देशों पर हमले को क्या कहेंगे अमेरिका ने तो अपने पड़ोसी ग्वाटेमाला और होंडुरास पर इस आरोप में हमला कर दिया था कि साम्यवाद उसके दरवाजे तक पहुंच गया है। सोवियत संघ ने 1956 में जब हंगरी पर हमला किया तो संयुक्त राष्ट्र में उसके विरुद्ध प्रस्ताव पर नेहरू तटस्थ रहे। रूस को छोड़कर हम उस अमेरिका के साथ कैसे खड़े हो जाएं, जिसने 1971 के युद्ध के समय अपना सातवां बेड़ा और ब्रिटेन ने अपनी नौसेना भेजी थी उस समय रूस ने भारत के बचाव में अपनी पनडुब्बियां भेजीं, जिसके कारण अमेरिका-ब्रिटेन को लौटना पड़ा। कश्मीर के मुद्दे पर रूस ने हमेशा भारत का साथ दिया। जनतंत्र की चिंता करने वाले तब कहां थे, जब चीन ने 1962 में भारत पर हमला किया और अभी हाल लद्दाख में अतिक्रमण का प्रयास किया सच्चाई यह है कि सब अपने हित की चिंता करते हैं। जनतंत्र, मानवता, संप्रभुता की बातें ढकोसला हैं, जो अपना एजेंडा आगे बढ़ाने के लिए सुविधानुसार इस्तेमाल की जाती हैं, पर दुख की बात यह है कि अपने देश में ऐसे भी लोग हैं, जो भारत के हित की बात पर भी विरोध में खड़े नजर आते हैं। भारत सरकार मध्य फरवरी से ही यूक्रेन में रह रहे भारतीयों को एडवाइजरी जारी कर रही थी। फिर वहां रह रहे भारतीय दूतावास के कर्मचारियों से कहा गया कि अपने स्वजनों को भारत भेज दें। वह समय था जब भारतीय छात्रों को वहां से निकल आना चाहिए था, लेकिन वे नहीं निकले। इसका एक कारण समझ आया एक छात्रा के ट्वीट से। उसने कहा कि फाइनल परीक्षा में सिर्फ तीन माह बचे हैं। बिना डिग्री जाऊंगी तो घर वालों को क्या मुंह दिखाऊंगी शायद इसी छात्रा की तरह तमाम छात्र इस उम्मीद में रुके रहे कि शायद युद्ध की नौबत न आए। अब सरकार आपरेशन गंगा के जरिये उन्हें निकालने के हरसंभव प्रयास कर रही है। रूस और यूक्रेन के अलावा यूक्रेन की सीमा से लगे देशों के प्रमुखों से प्रधानमंत्री बात कर रहे और इन देशों में चार मंत्री भेजे हैं। वायुसेना को भी लगाया जा रहा है। फिर भी मोदी को कोसा जा रहा। इसी क्रम में क्रांग्रेसियों ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर के घर के सामने प्रदर्शन भी किया। संकट के समय इस तरह की सस्ती राजनीति नई नहीं। यूक्रेन संकट के बीच देश में एक संवैधानिक संकट खड़ा करने का भी अभियान चल रहा है। इसमें चार प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों की खास भूमिका है। बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्यपाल जगदीप धनखड़ के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। उनकी अवमानना, अपमान करने का वह कोई मौका नहीं छोड़ रहीं। राज्यपाल विधानसभा का सत्रावसान पर करते हैं, पर उनके खिलाफ यह अभियान चलाया गया कि उन्होंने मंत्रिमंडल की सिफारिश के बिना ऐसा किया किया। इस मुद्दे को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी उठाया। यह भी देखें कि केंद्र से टकराव के लिए कैसे-कैसे मुद्दों को चुना जा रहा है तमिलनाडु सरकार ने राज्यपाल के अभिभाषण से 'जयहिंद' निकलवा दिया। स्टालिन को जयहिंद से ही नहीं, भारत माता की जय बोलने से भी तकलीफ है। यूक्रेन से लौटे राज्य के विद्यार्थियों ने एयरपोर्ट पर भारत माता की जय बोला तो उस वीडियो के प्रसारण को रोक दिया गया।

रूस-यूक्रेन युद्ध संकेत है कि भारत को सैन्य मोर्चे पर और सशक्त होना होगा, जिसके लिए अपनी आर्थिक हैसियत बढ़ाना जरूरी

जब भारत कोविड की चुनौतियों से बाहर निकलकर तेजी से आर्थिक विकास की डगर पर बढ़ रहा था, तब यूक्रेन संकट ने चिंत पैदा कर दी है। हाल में जारी आंकड़ों के अनुसार चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 5.4 प्रतिशत रही। वहीं पूरे वित्त वर्ष के दौरान आर्थिक वृद्धि दर 8.9 प्रतिशत रहने के आसार हैं। इससे भारत को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में रेखांकित किया जा रहा है। रूस-यूक्रेन संकट के बावजूद भारतीय शेयर बाजार से लेकर विदेशी मुद्रा भंडार के आंकड़े अर्थव्यवस्था में गहराई और संभावनाओं को दर्शाते हैं, लेकिन इस संकट ने भारत के समक्ष अपनी प्राथमिकताओं को नए सिरे से तय करने का दबाव बढ़ा दिया है। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत को चीन और पाकिस्तान जैसे दो मोर्चों पर चुनौती मिलती रही है। उनसे निपटने के लिए हमारा एक सैन्य शक्ति बनना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है और सैन्य शक्ति बनने का रास्ता आर्थिक ताकत से ही निकलेगा। हमें आर्थिक मोर्चे पर बहुआयामी रणनीति बनानी होगी। पहला काम यह करना होगा कि कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाकर उसे आर्थिक मजबूती का आधार बनाया जाए। दूसरा, दुनिया का नया मैन्यूफैक्चरिंग गढ़ बनकर

विनिर्माण निर्यात बढ़ाने होंगे। तीसरा, उद्योग-कारोबार को और सुगम बनाकर अधिक एफडीआइ आकर्षित करना होगा। चौथा, आइटी आउटसोर्सिंग से विदेशी आय अर्जन बढ़ाकर उससे अर्थव्यवस्था को मजबूती देनी होगी। वर्तमान में कृषि क्षेत्र से मिल रहे संकेत उत्साहजनक हैं। कोविड महामारी की चुनौतियों के बीच दूसरे क्षेत्रों में भारी गिरावट के बीच कृषि ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र रहा, जिसने लगातार तेज वृद्धि दर्ज की। 2021-22 में देश में खाद्यान्न उत्पादन रिकार्ड 31.60 करोड़ टन पहुंचने का अनुमान है। इस साल तिलहन उत्पादन 3.71 करोड़ टन रह सकता है, जो पिछले साल 3.59 करोड़ टन था। सभी प्रमुख फसलों के एमएसपी में उत्साहजनक वृद्धि, पीएम किसान सम्मान निधि के माध्यम से जनवरी 2022 तक 11.30 करोड़ से अधिक किसानों को 1.82 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक मदद, कृषि क्षेत्र में शोध एवं नवाचार को बढ़ावा और अन्य विकास योजनाओं से कृषि उत्पादन में ऐसा रुझान संभव हुआ है। रिकार्ड खाद्यान्न उत्पादन न केवल देश को आर्थिक शक्ति बनाने, बल्कि महंगाई को थामने में भी मददगार होगा। वैश्विक आपूर्ति पर भी हमारी पकड़ मजबूत होगी। दुनिया को 25 प्रतिशत से अधिक गेहूं का निर्यात करने वाले रूस और यूक्रेन के युद्ध में फंसने से भारत के लिए संभावनाओं का बढा तय है। इतना ही नहीं चावल, बाजरा, मक्का और अन्य मोटे अनाज के निर्यात में भी वृद्धि की स्थिति बनती दिख रही है। अनुमान है कि आगामी वित्त वर्ष में कृषि निर्यात 55-60 अरब डालर के स्तर तक पहुंच सकता है। यह ध्यान रखा जाए तो बेहतर कि कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाकर उसे अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ बनाने में निजी क्षेत्र की अहम भूमिका हो सकती है। लेदर प्रोडक्ट, फूड

डिजिटल विश्वविद्यालय से संभव होगा उच्च शिक्षा को सभी तक पहुंचाना

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों शिक्षा क्षेत्र से संबंधित आयोजित एक वेबिनार में कहा कि नेशनल डिजिटल यूनिवर्सिटी भारत की शिक्षा व्यवस्था में अपनी तरह का एक अनोखा एवं अभूतपूर्व कदम है। कोविड महामारी के दौरान डिजिटल या वर्चुअल शिक्षा दुनिया भर में सीखने-सिखाने के सबसे शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभर रही है। ऐसे में यह आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि देश में डिजिटल एजुकेशन के लिए एक बेहतर ढांचा तैयार किया जाए। इस दिशा में डिजिटल विश्वविद्यालय मील का पत्थर साबित होने वाला एक जरूरी और स्वाभाविक कदम है। यह कदम भारतीय शिक्षा पद्धति पर अमिट प्रभाव डालेगा। इससे एक ओर कक्षा में आने की बाध्यता खत्म होगी, वहीं दूसरी तरफ विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं पर इंफ्रास्ट्रक्चर लोड बढ़ाने के दबाव से भी निजात मिलेगी। यह एक ऐसा विश्वविद्यालय होगा जो छात्रों को कई तरह के कोर्स और डिग्रियों की शिक्षा पूरी तरह आनलाइन उपलब्ध कराएगा। जरूरी डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और ट्रेनिंग उपलब्ध कराने के लिए यह देश के अन्य केंद्रीय विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर काम करेगा। यह विश्वविद्यालय एसईडीजी में नामांकन, संकाय विकास, रोजगार क्षमता बढ़ाने वाले कौशल, क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री, औपचारिक और गैर-औपचारिक (पूर्व शिक्षा को मान्यता देना) शिक्षण आदि में मौजूद अंतर को समाप्त कर सकता है। डिजिटल विश्वविद्यालय शिक्षा और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए लाभप्रद साबित होगा। इससे देश के नामी गिरामी विश्वविद्यालय और कालेजों को अध्ययन का मौका मिलेगा, जिन्हें कालेजों की उच्च कटआफ के कारण एडमिशन नहीं मिलता था। मालूम हो कि दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों में नामांकन पैमाना 99 प्रतिशत से भी ऊपर चला जाता है। देश के अन्य प्रतिष्ठित महाविद्यालयों की भी कमोबेश यही स्थिति है। ऐसे में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के बच्चों के लिए 90 प्रतिशत का स्तर पाना ही मुश्किल होता है।

हर-हर महादेव के उद्घोष से गूंजे जनपद के शिवालय

जिले में महाशिवरात्रि शहर से लेकर गांव तक श्रद्धापूर्वक मनाया गया। मंदिरों में आस्था उमड़ी रही। हर-हर महादेव के उद्घोष के साथ दर्शन-पूजन का सिलसिला देर रात तक चलता रहा। श्रद्धालुओं ने दूध, दही, घी, शहद, गन्ना रस से भगवान का अभिषेक किया। इसके पश्चात दिव्य आरती हुई। भगवान शंकर की बारात भी निकाली गई। भगवान शिव का पूरे रीति-रिवाज से विवाह कार्यक्रम संपन्न हुआ। संगीतमय रामायण का गायन सुन श्रोता मंत्रमुग्ध महाशिवरात्रि पर्व पर कोलउंद स्थित अतिप्राचीन शिव

मंदिर परिसर में दर्शनार्थियों ने मेले का आनंद उठाया। नरायनपुर क्षेत्र के शिवालयों में दर्शनार्थियों ने महादेव का दर्शन-पूजन कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। जगह-जगह भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। संगीतमय रामायण का गायन सुन श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। बैकुंठपुर स्थित बैकुंठेश्वर महादेव मंदिर में दर्शनार्थियों का ताता लगा रहा। शाम को शिव बारात निकाली। महादेव की सुंदर झांकी सजाई गई थी। भंडारे में भक्तों ने महाप्रसाद भी ग्रहण किया। रैपुरिया गंगा घाट पर स्नार्थियों का तांता लगा रहा। बैकुंठपुर में आयोजित शिवचर्चा में संचालक बाबा बनवारी ने शिव शिष्यों के साथ शिवचर्चा में भाग लिया। भगवान भोलेनाथ की आराधना पर्व महाशिवरात्रि पर बम बम भोले के जयकारे से शिवालय के साथ नगर गूंज उठा। सुबह से ही मंदिरों में भगवान शिव के जलाभिषेक का सिलसिला शुरू हो गया। नगर के कटरा, बौलिया, चौक बाजार, सत्यानगंज, पियरवा पोखरा, मिश्र पोखरा, पटवा टोला आदि शिव मंदिरों पर भक्तों की हुजूम उमड़ पड़ी थी। अहरौरा जलाशय स्थित महादेवा मंदिर पर कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पहलवानों ने जोर-आजमाइश की। जिसे देखने के लिए भीड़ जुटी हुई थी। महाशिवरात्रि पर विजयपुर के पुरानी बाजार शिव मंदिर से घंटा घड़ियाल व बैंड-बाजा के साथ शिव बारात निकली, जो परमहंस आश्रम तक पहुंची। जहां महादेव का दर्शन पूजन कर बारात वापस पुरानी बाजार शिव मंदिर पहुंची। विश्व कल्याण मिशन ट्रस्ट की राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रियंका पांडेय, सुदीप अग्रसर, नवनीत तिवारी ,रिभू चौबे, संतोष सिंह आदि शिवभक्त बारात के साथ चल रहे थे। महाशिवरात्रि पर रामलीला के महंत हनुमानदास महराज की अगुवाई में बरौंधा बाजार में गाजा बाजा के साथ शिव विवाह की भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

प्रत्याशी के साथ एक दिन विकास की रफ्तार को निरंतर रखूंगा बरकरार

घर से सुबह सात बजे निकले घोरावल विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी अनिल मौर्य सबसे पहले बरैला स्थित शिवमंदिर पहुंचे। यहां दर्शन-पूजन के बाद वहां मौजूद लोगों से आशीर्वाद लिया। अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में किए गए कार्यों की जानकारी देते हुए विकास की रफ्तार को निरंतर बरकरार रखने का वादा किया। इसके बाद विधायक का काफिला गौरीशंकर धाम के लिए निकला। यहां दर्शन करने के बाद लगे मेले में शामिल हुए। जनता से उन्हें पुनः आशीर्वाद देने की अपील की। अनिल ने कहा कि उन्होंने जो काम शुरू किया है उसे परिणाम तक पहुंचाने के लिए एक मौका और चाहिए। बताया कि आज विधानसभा क्षेत्र के सभी ग्राम पंचायतों में बिजली पहुंच रही है,

साथ ही 18-18 घंटे आपूर्ति की जा रही है। हर घर तक शुद्ध पेयजल पहुंचाने के लिए नमामि गंगे योजना पर तेजी से काम कर रहा है। जल्द ही सबको शुद्ध पानी मिलना शुरू हो जाएगा। सड़क व स्वास्थ्य सुविधा के लिए भी कई गंभीर प्रयास किए गए हैं। विधानसभा क्षेत्र में मेडिकल कालेज का निर्माण भी तेजी से चल रहा है। इसके पूरा होने से जिले के अलावा आसपास के क्षेत्रों के लोगों को भी बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मिलेगी। इसके बाद विधायक शिवद्धार धाम पहुंचे। यहां पर दर्शन करने के बाद लगे मेले में शामिल हुए। जनता से एक बार फिर से वोट देने की अपील की। कहा कि सभी समस्याओं का समाधान करूंगा। अगर कहीं कोई कमी है तो उसे पूरा करने के लिए पूरी ताकत लगाकर दूर करूंगा।

रूस-यूक्रेन गतिरोध ऐसा पहला मसला नहीं जब किसी संकट को देश में सस्ती राजनीति का जरिया बनाने की कोशिश हो रही है.........

इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि रूस के भीषण आक्रमण का सामना कर रहे यूक्रेन में फंसे भारतीयों और विशेष रूप से वहां मेडिकल की पढ़ाई करने गए हमारे हजारों छात्र मुश्किल में हैं। यह एक तथ्य है कि उन्हें वहां से निकालने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। यह भी सही है कि कहीं-कहीं यूक्रेन की पुलिस और सेना भारतीय छात्रों को बाहर निकलने में मदद करने के बजाय उन्हें परेशान कर रही है। कुछ मामलों में उनसे मारपीट की घटनाएं भी सामने आई हैं, लेकिन यह जानना भी जरूरी है कि जब यूक्रेन में भारतीय दूतावास सक्रिय है और 'आपरेशन गंगा' के तहत चार केंद्रीय मंत्रियों को उसके पड़ोसी देशों में भेजा गया है, तब अन्य देश वहां से अपने लोगों को निकालने के लिए क्या कर रहे हैं वे कुछ नहीं कर रहे हैं। अमेरिका ने अपने लोगों से कहा है कि वे यूक्रेन से निकलने की व्यवस्था खुद करें। ब्रिटेन और जर्मनी ने भी हाथ खड़े कर दिए हैं। ब्रिटेन तो अपना दूतावास कीव से हटाकार पोलैंड के निकटवर्ती शहर में ले गया है। चीन ने पहले भारत की तरह अपने छात्रों से कहा था कि चीनी ध्वज लेकर पड़ोसी देशों में पहुंच जाएं, लेकिन उसके रूस के समर्थन में खुलकर खड़े होने के बाद यूक्रेनी लोग चीनी छात्रों के पीछे पड़ गए। इससे चीन को एडवाइजरी वापस लेने के साथ यह भी कहना पड़ा कि वे अपनी पहचान उजागर करने से बचें। चीन के करीब छह हजार छात्र यूक्रेन में फंसे हैं। जब यूक्रेन में फंसे भारतीय जैसे-तैसे निकालकर देश लाए जा रहे, तब अन्य देशों को समझ नहीं आ रहा कि क्या करें? कई देशों ने तो अपने

दूतावास ही बंद कर दिए हैं। अच्छा होता कि हमारे छात्र यूक्रेन से तभी निकलना शुरू कर देते जब वहां के भारतीय दूतावास ने 15 फरवरी को यह एडवाइजरी जारी की थी कि जिन छात्रों के लिए यहां रहना जरूरी न हो, वे निकल जाएं। अगले दिन उसने फ्लाइट की कमी को देखते हुए यह सूचित किया कि अमुक-अमुक फ्लाइट उपलब्ध हैं। चूंकि फ्लाइट कम थीं और उनका किराया आसमान छूने लगा था, इसलिए तमाम भारतीय छात्र चाहते हुए भी वहां से निकल नहीं पाए। जब तक भारत सरकार विशेष फ्लाइट भेजने की तैयारी करती तब तक देर हो चुकी थी। यह देरी भारी पड़ी। यूक्रेन पर रूस के हमले के साथ ही उसे नो फ्लाई जोन घोषित कर दिया गया। इसके चलते वहां जा रहे एयर इंडिया के विमान को बीच रास्ते लौटना पड़ा। चूंकि यूक्रेन पर रूस के हमले की आशंका पहले से थी इसलिए भारतीय दूतावास ने 25 जनवरी से ही वहां रह रहे भारतीयों का रजिस्ट्रेशन करना शुरू कर दिया था। इससे यह पता करने में आसानी हो रही कि यूक्रेन में कितने भारतीय हैं यह कामना करनी चाहिए कि आपरेशन गंगा के तहत सभी भारतीयों को सुरक्षित लाने में सफलता मिले। यह आसान काम नहीं, लेकिन इसे करना ही होगा। इस कठिन काम के पूरा होने की आशा इसलिए है कि यूक्रेन के पड़ोसी हंगरी, रोमानिया, पोलैंड आदि भारतीय छात्रों की निकासी में मदद कर रहे हैं। पोलैंड ने सबसे पहले बिना वीजा भारतीय छात्रों को अपने यहां आने की अनुमति दी। पोलैंड भारत के प्रति बेहद मित्रवत है। इसका एक कारण यह है कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जब वहां के सैनिकों की पतियों और बच्चों का एक जत्था जहाज में सवार होकर दर-दर भटक रहा था, तब जामनगर, गुजरात के महाराजा दिग्विजय सिंह ने उन्हें न केवल शरण दी, बल्कि वर्षों तक तक उनकी देखभाल भी की। इसे पोलैंड के लोग भूले नहीं। उन्होंने अपने यहां के स्कूल और सड़क का नामकरण उनके नाम पर किया। हालांकि पोलैंड की सीमा में यूक्रेन छोड़ रहे लाखों लोगों के एकत्रित हो जाने के कारण उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन उसकी इस मुश्किल को समझे गए बगैर कुछ भारतीय भारत में पोलैंड के राजदूत के पीछे पड़ गए। इनमें शिवसेना की एक सांसद भी थीं। आखिरकार राजदूत को यह कहना पड़ा कि कृपया फेक न्यूज फैलाने से बाज आएं। इन सांसद जैसे कुछ अन्य भी हैं, जिन्होंने इस आपदा को अपने लिए अवसर समझ लिया है। वे हालात समझे बगैर सरकार को कोस रहे हैं। यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को लेकर इंटरनेट मीडिया पर दो तरह के लोग दिख रहे। एक वे जो यह बता रहे कि कैसे उन्हें यूक्रेन से लाया जा रहा है और दूसरे वे जो यह जता रहे कि जब वहां हमारे छात्र मुसीबत से दो-चार हैं, तब सरकार ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया है। इनमें कई विपक्षी नेता भी हैं। राहुल गांधी का कहना है, 'हमेशा की तरह हमारे प्रधानमंत्री नदारद हैं। यह पहली बार नहीं जब आपदा के वक्त कुछ लोग उसे अपने लिए अवसर मानकर सरकार की निंदा कर रहे हैं। आपदा चाहे देशव्यापी हो या राज्यव्यापी, जहां जो विपक्ष में होता है, वह हालात की गंभीरता समझे बगैर सरकार पर हमला करने और कई बार तो धरना-प्रदर्शन करने में जुट जाता है। यह प्रवृत्ति रुकनी चाहिए। इसी के साथ यह भी समझना होगा कि जितना जरूरी यूक्रेन से छात्रों को सुरक्षित लाना है, उतना ही इसके उपाय भी करना कि उन्हें मेडिकल शिक्षा के लिए विदेश और यहां तक कि बांग्लादेश और फिलीपींस जैसे देशों में न जाना पड़े। यदि हमारी सरकारों की ओर से ऐसे उपाय किए गए होते तो शायद आज यूक्रेन में भारतीय छात्रों की जान खतरे में नहीं पड़ी होती। जब वहां से आने वाली खबरे चिंता बढ़ा रही हैं, तब यह भी याद रखा जाना चाहिए कि दो साल पहले कोरोना के कारण चीन से लौटे भारतीय मेडिकल छात्र अभी तक वहां वापस नहीं जा पाए हैं।

यूक्रेन से छात्रों को लाने के अभियान में शामिल होगी भारतीय वायुसेना, पीएम मोदी ने दिया निर्देश, कहा- इससे आपरेशन में आएगी गति

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूस-यूक्रेन जंग में फंसे भारतीय छात्रों को वापस लाने के अभियान 'आपरेशन गंगा' में

भारतीय वायुसेना को भी शामिल होने का निर्देश दिया है। इसके बाद वायुसेना ने तत्काल तैयारियां शुरू कर दीं। वह इस अभियान में अपने सबसे बड़े परिवहन विमानों सी-17 ग्लोबमास्टर को लगाएगी। 'आपरेशन गंगा' को गति देने के लिए प्रधानमंत्री ने भारतीय वायुसेना को इसमें शामिल होने के लिए कहा है। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वायुसेना के विमानों के आपरेशन में शामिल होने से भारतीयों के यूक्रेन से लौटने की प्रक्रिया गति पकड़ेगी और उनकी संख्या में भी वृद्धि होगी। साथ ही भारत से भेजी जा रही राहत सामाग्री भी तेजी से पहुंचेगी। सरकारी सूत्रों ने संकेत दिए कि सी-17 विमान आपरेशन गंगा के तहत बुधवार से अपनी उड़ानें शुरू कर सकते हैं। प्रधानमंत्री के निर्देश के बाद भारतीय वायुसेना ने भी कहा कि यूक्रेन से अपने नागरिकों को निकालने के लिए जिस तरह की भी जरूरत है, उसके लिए वह तैयार है। हालांकि वायुसेना ने आपरेशन गंगा के तहत अपने विमानों की उड़ान का विस्तृत ब्योरा अभी जारी नहीं किया है। सी-17 ग्लोबमास्टर में एक साथ 300 से 400 लोगों को लाया जा सकता है। मालूम हो कि पिछले साल अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद पैदा हुए हालात में वहां से भारतीय नागरिकों के अलावा अफगानी हिंदुओं और सिखों को भारत लाने के लिए भी वायुसेना ने विशेष अभियान चलाया था। इसमें भी वायुसेना ने अपने सी-17 विमानों को लगाया था।

संक्षिप्त समाचार

ज्योतिषी ने झांसा देकर विवाहिता से किया दुष्कर्म, पीड़िता सलाह लेने के लिए ज्योतिषी के कार्यालय गई थी

कोलकाता। मांगलिक दोष काटने के नाम पर महिला को मादक पद्धार्थ खिलाकर आबरू लूटने के आरोप में पुलिस ने एक ज्योतिषी को गिरफ्तार किया है। आस्था और विश्वास को झकझोरने वाली पाखंडी की यह वारदात कोलकाता के चितपुर थाना इलाके की है। पुलिस ने बताया कि आरोपित ज्योतिषी का नाम सुभाष घोष है। उसे रिमांड में लेकर पूछताछ की जा रही है। जांच में सामने आया है कि पीड़ित महिला कुछ महीने पहले ज्योतिषी से सलाह लेने उसके कार्यालय गई थी। उसने महिला के मांगलिक दोष से उसके पति व बच्चे पर अनिष्ट की आशंका जताते हुए सुझाए गए रतन पहनने को व तांत्रिक पद्धति से निवारण का सुझाव दिया। महिला उसके झांसे में आ गई। ज्योतिष उसे अपने साथ दो बार वीरभूम जिले के तारापीठ ले गया। जहां उसने तंत्र साधना के नाम पर उसे मादक पदार्थ खिलाकर बेसुध किया फिर उसकी आबरू लूटी। तीसरी बार ज्योतिष उसे अपने साथ दक्षिण 24 परगना जिले के डायमंड हार्बर ले गया। वहां भी उसने उसे शराब पिलायी, जिसके बाद पीड़िता बेहोश हो गई। इसके ज्योतिष ने उसके साथ दुष्कर्म किया। होश में आने के बाद महिला को अपने साथ हुई वारदात का पता चला। वहां

गुजरात विधानसभा बजट सत्रः अवैध शराब की बिक्री और मादक पदार्थों को लेकर विपक्ष ने जमकर मचाया हंगामा

अहमदाबाद। गुजरात में शराबबंदी के बावजूद अवैध शराब की बिक्री होने, अडानी पोर्ट पर हजारों करोड़ का मादक पदार्थ पकड़े जाने, राज्य की सीमाओं पर पकड़े गए मादक पदार्थों के मामले में विधानसभा में विपक्ष ने खूब हंगामा किया। गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी जवाब देने के लिए खड़े हुए लेकिन विपक्ष के हंगामे के चलते वह जवाब पेश नहीं कर सके सदन को कुछ समय के लिए स्थगित करना पड़ा। गुजरात विधानसभा के बजट सत्र के दूसरे दिन प्रशनेत्तरी के दौरान कांग्रेस विधायक भगा भाई बारड ने सौराष्ट्र के गिर सोमनाथ एवं राजकोट जिले में अवैध शराब तथा नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार तथा उसके पकड़े जाने का सवाल उठाया । गृह राज्य मंत्री संघवी ने आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि गुजरात पुलिस ने इस मामले में लगातार कार्रवाई करते हुए हजारों की संख्या में केस दर्ज किए हैं ।

बिहार विधान परिषद की 24 सीटों के लिए अप्रैल में चुनाव, आयोग ने कर दिया तारीख का ऐलान

पटना। बिहार विधान परिषद चुनाव के लिए लंबे समय से इंतजार कर रहे दावेदारों का इंतजार खत्म होने वाला है। चुनाव आयोग ने बिहार विधान परिषद में स्थानीय प्राधिकार कोटे की रिक्त सभी 24 सीटों पर मतदान के कार्यक्रम जारी कर दिए हैं। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से चुनाव के एलान के साथ ही सभी निर्वाचन क्षेत्रों में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। कार्यक्रम के अनुसार चार अप्रैल को सभी रिक्त पदों के लिए वोट डाले जाएंगे। मतदान सुबह आठ बजे प्रारंभ होकर दोपहर चार बजे तक चलेगा, जबकि मतगणना सात अप्रैल को होगी। 75 सदस्यीय विधान परिषद में स्थानीय प्राधिकार की 24 सीटें हैं, जो 16 जुलाई 2021 से ही खाली हैं। कोरोना के दौरान पंचायत चुनाव में देरी के चलते चुनाव प्रक्रिया पूरी नहीं की जा रही थी। किंतु कोरोना का असर जैसे ही कम हुआ, सभी दलों ने अपने स्तर से तैयारियां तेज कर दी थीं। राजद ने भाकपा के साथ सभी 24 सीटों के लिए प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया है। दूसरी ओर भाजपा-जदयू ने भी अपने हिस्से की सीटें बांट ली हैं। गठबंधन के तहत भाजपा के खाते में 12 सीटें गई हैं, जबकि जदयू के हिस्से में 11 सीटें हैं। एक सीट पशुपति पारस गुट के राष्ट्रीय लोकजनशक्ति पार्टी को मिली है। विधान परिषद की इन सीटों के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 16 मार्च तक चलेगी। 17 मार्च को नामांकन पत्रों की स्क्रूटिनी होगी। 21 मार्च तक उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र वापस ले सकेंगे। चार अप्रैल को इन पदों के लिए मतदान कराया जाएगा। मतदान के लिए आठ घंटे का वक्त मतदाताओं को दिया कराया जाएगा। मतदान के लिए आठ घंटे का वक्त मतदाताओं को दिया जाएगा। मतदान सुबह आठ बजे से शुरू होगा और शाम चार

जाएगा। मतदान सुबह आठ बजे से शुरू होगा और शाम चार बजे तक चलेगा। सात अप्रैल को मतगणना कराई जाएगी। नतीजे इसी दिन दोपहर तक मिल जाने की उम्मीद रहेगी। यूं निर्वाचन आयोग ने चुनाव प्रक्रिया को 11 अप्रैल तक समाप्त करने की प्रक्रिया निर्धारित की है। बिग बास विनर तेजस्वी प्रकाश के साथ दिख रहे बिहार के प्रणव वत्स, पसंद आ रहा 'क्यों न आये' सांग विधान परिषद की इन सीटों के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 16 मार्च तक चलेगी। 17 मार्च को नामांकन पत्रों की स्क्रूटिनी होगी। 21 मार्च तक उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र वापस ले सकेंगे। चार अप्रैल को इन पदों के लिए मतदान बजे तक चलेगा। सात अप्रैल को मतगणना कराई जाएगी। नतीजे इसी दिन दोपहर तक मिल जाने की उम्मीद रहेगी। यूं निर्वाचन आयोग ने चुनाव प्रक्रिया को 11 अप्रैल तक समाप्त करने की प्रक्रिया निर्धारित की है। चुनाव को लेकर आदर्श आचार संहिता और कोविड गाइडलाइन का पालन करने का निर्देश भारत निर्वाचन आयोग ने दिया है। इसके लिए विस्तृत नियमावली आयोग की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। आयोग ने बिहार सरकार के मुख्य सचिव को निर्देश दिया है कि वे चुनाव में कोविड गाइडलाइन के अनुपालन के लिए एक वरिष्ठ अधिकारी को प्रतिनियुक्त करें। इस बारे में जानकारी चुनाव आयोग के उप सचिव प्रफुल्ल अवस्थी ने दी है। रीतलाल यादव (पटना), रीना देवी (नालंदा), मनोरमा देवी (गया, जहानाबाद व अरवल), रंजन कुमार सिंह (औरंगाबाद), सलमान रागिब (नवादा), राधा चरण साह (भोजपुर), संतोष कुमार सिंह (रोहतास-कैमूर), सच्चिदानंद राय (सारण), टुन्नु जी पांडेय (सिवान), आदित्य नारायण पांडेय (गोपालगंज), राजेश राम (पश्चिम चंपारण), राजेश कुमार उर्फ बबलू गुप्ता (पूर्वी चंपारण), दिनेश प्रासद सिंह (मुजफ्फरपुर), सुबोध कुमार (वैशाली), दिलीप राय (सीतामढ़ी-शिवहर), सुनील कुमार सिंह (दरभंगा), हरि नारायण चौधरी (समस्तीपुर), संजय प्रसाद (मुंगेर-जमुई-लखीसराय-शेखपुरा), रजनीश कुमार (बेगूसराय खगड़िया), मनोज यादव (भागलपुर-बांका), सुमन कुमार (मधुबनी), दिलीप कुमार जायसवाल (पूर्णिया-अररिया-किशनगंज) और अशोक अग्रवाल (कटिहार)। पटना, नालंदा, गया सह जहानाबाद सह अरवल, औरंगाबाद, नवादा, भोजपुर सह बक्सर, रोहतास सह कैमूर, सारण, सिवान, गोपालगंज, पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी सह शिवहर, दरभंगा, समस्तीपुर, मुंगेर सह जमुई सह लखीसराय सह शेखपुरा, बेगूसराय सह खगड़िया, सहरसा सह मधेपुरा सह सुपौल, भागलपुर सह बांका, मधुबनी, पूर्णिया सह अररिया सह किशनगंज और कटिहार निर्वाचन क्षेत्र।

ग्रीन लाइन पर 25 मार्च तक प्रभावित रहेगी सेवा, परेशानी से बचने के लिए नोट करें पूरा शेड्यूल

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल निगम की ग्रीन लाइड से जुड़े 23 मेट्रो स्टेशन के जरिये सफर करते हैं तो आगामी 25 मार्च तक इस रूट पर ट्रेन सेवाएं प्रभावित हैं। यात्रियों को किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हो, इसलिए दिल्ली मेट्रो रेल निगम की ओर से ग्रीन लाइन रूट पर यात्रियों के लिए एडवायजरी भी जारी की गई है। डीएमआरसी के अनुसार, ग्रीन लाइन कारिडर के ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन से इंद्रलोक और कीर्तिनगर के बीच मेट्रो के परिचालन की समय सारणी में बदलाव किया गया है। इसके चलते लोगों को यात्रा के दौरान परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। गौरतलब है कि पंजाबी बाग में हास्ट स्टेशन का निर्माण किया रहा है। इसके चलते यहां पर समय सारिणी में बदलाव किया गया है। इससे पहले जून, 2021 से ट्रेनों को रेगुलेट करना शुरू किया था। जरूरत पड़ने पर डीएमआरसी ने इसके लिए ग्रीन लाइन पर ट्रेनों का नया टाइमटेबल जारी किया था। कोरोना की वजह से निर्माण जारी रही और फिर जून से सितंबर तक ट्रेनों को रेगुलेट किया जाना था। इसी कड़ी में इस समय सीमा को 27 फरवरी तक एक्सटेंड कर दिया गया था। अब इसे 25 मार्च तक के लिए बढ़ा दिया गया है। डीएमआरसी ने 25 मार्च तक सप्ताह में 6 दिन यानी सोमवार से शनिवार के बीच खासकर सुबह और रात के दौरान मेट्रो ट्रेनों की परिचालन की समय सारणी में बदलाल किया है। इतना ही नहीं, ग्रीन लाइन रूट पर रविवार को भी मेट्रो ट्रेनों के आवागमन के समय में बदलाव किया गया है। यह बदलाव 25 मार्च

तक के लिए लागू रहेगा। डीएमआरसी ने पिछले ट्वीट कर जानकारी दी कि आगामी 25 मार्च तक ग्रीन लाइन की पहली और आखिरी मेट्रो के समय में बदलाव किया गया है। दरअसल, इस रूट पर पंजाबी बाग हाल्ट पर काम जारी रहने से 28 फरवरी से ही समय सारिणी में बदलाव जारी है, जिस 25 मार्च तक बढ़ाया गया है। डीएमआरसी ने ट्वीट कर कहा है- 'ग्रीन लाइन की पहली और आखिरी मेट्रो के समय में बदलाव को अब 25 मार्च तक 2022 तक जारी रखा जाएगा। ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) से इंद्रलोक रूट पर सुबह 7 बजे - रात 9 बजे ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) से कीर्ति नगर पर सुबह 7:18 बजे - रात 9:10 बजे इंद्रलोक से ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) पर सुबह 7:25 बजे - रात 9:30 बजे कीर्ति नगर से ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) पर सुबह 7:25 बजे - रात 9:30 बजेसुबह 8 बजे - रात 9 बजे (ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) से इंद्रलोक) सुबह 8:18 बजे - रात 9:10 बजे (ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) से कीर्ति नगर) सुबह 8:25 बजे - रात 9:30 बजे इंद्रलोक से ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़) सुबह 8:25 बजे - रात 9:30 बजे कीर्ति नगर से ब्रिगेडियर होशियार सिंह (बहादुरगढ़।

थाने के पास पिता-पुत्र ने आत्मदाह का प्रयास किया

(आधुनिक समाचार सेव)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। चोरी के मामले में रिपोर्ट दर्ज होने के आठ माह बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगा पिता-पुत्र ने फेज-3 थाने के निकट बने एसीपी कार्यालय के पास बुधवार रात आत्मदाह का प्रयास किया। दोनों ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क लिया। हंगामा होता देखकर पुलिसकर्मियों ने दोनों को किसी तरह काबू किया। पुलिस ने पिता-पुत्र सहित तीन लोगों को हिरासत में ले लिया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच करने में जुटी है। जानकारी के अनुसार फेज-3 थाना क्षेत्र के गढ़ी चौखंडी निवासी रविंदर यादव के घर से 17 जुलाई 2021 को लाखों रुपये की नकदी और आभूषण चोरी हो गए थे। इस मामले में पीडित पक्ष की ओर से अपने ही कुछ परिचितों पर चोरी करवाने का आरोप लगाए फेज-3 थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इस मामले में बुधवार को रविंदर यादव अपने पुत्र काजू के साथ फेज-3 थाना क्षेत्र के पास बने एसीपी ऑफिस कार्यालय में पहुंचे और आठ माह बाद से भी पुलिस द्वारा कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया। इसके बाद बाहर आकर खुद पर मिट्टी का तेल छिड़क लिया। मिट्टी का तेल छिड़का देख कार्यालय में तैनात पुलिसकर्मियों में हड़कंप मच गया। पुलिसकर्मियों ने आनन-फानन में दोनों को अपने कब्जे में ले लिया और आग नहीं लगाने दी। इस मामले में पुलिस ने पिता-पुत्र सहित तीन लोगों को हिरासत में लिया है। नोएडा सेंट्रल जोन के एडीसीपी का कहना है कि इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर जांच की जा रही है। जिन लोगों पर इन लोगों ने आरोप लगाया था, उनसे भी पूछताछ की गई थी। हिरासत में लिए गए तीनों लोगों को काउंसलिंग के बाद छोड़ा जाएगा। वहीं, इस मामले में पीडित रविंद्र के पुत्र सौरभ ने बताया कि इस मामले में दो आरोपी युवक सोनू और मोनू को नामजद कर पुलिस से शिकायत की थी, मगर रिपोर्ट दर्ज होने के बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई। हम तभी से सिर्फ थाने के चक्कर काट रहे हैं।

देश के किसानों की हाल बदहाल- रवि राघव

(आधुनिक समाचार सेव)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। हमारा देश कृषि प्रधान देश है लेकिन हमारे देश के किसान बेहाल हैं किसानों की सबसे बड़ी समस्या फसल का उचित मूल्य ना मिलना हैउक्त बाते भारतीय किसान यूनियन (भानू) प्रदेश सचिव रवि राघव ने हमारे नोएडा ब्यूरो प्रभारी देव मणि शुक्ल से एक भेंटवार्ता में कही। आगे उन्होंने कहा है कि भारतीय किसान यूनियन भानू ने हमेशा किसान आयोग के गठन और किसानों के संपूर्ण कर्ज माफी की मांग किया है। अच्छी फसल के लिए अच्छे बीजों का होना बेहद जरूरी है लेकिन सही सरकारी वितरण तंत्र ना होने के कारण छोटे किसानों को अच्छे बीज नहीं मिल पाते हैं इससे उनकी फसलों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है किसान नेता ने सरकार से मांग की है कि किसानों को अच्छे बीज और खाद समय पर मिलने चाहिए।जिससे किसानो का भविष्य उज्जवल हो सके और देश में विकास को गति मिल सके।

आत्मनिर्भरता का पर्याय बनी महिला स्व सहायता समूह

(आधुनिक समाचार सेव)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल । आजीविका मिशन के द्वारा संचालित महिला स्व-सहायता समूह महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन प्रदान करने के लिए मील का पत्थर साबित हो रही है। जिले के जनपद पंचायत बुढार के जमुडी की सरस्वती स्व-सहायता

समूह ने इस बात को चरितार्थ किया। ग्राम जमुडी की श्रीमती नीतू सोनी जो घरेलू महिला है उनके चार पुत्रियां है उनके परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही थी कि वे अपने परिवार और बच्चों का अच्छे भरण-पोषण कर सकें। उनके पति मनरेगा कार्य में मजदूरी करने के साथ कृषि भूमि पर साधारण खेती कर परिवार का पालन-पोषण करते थें। आय सीमित होने के कारण उन्हें परिवार के पालन-पोषण में बहुत परेशानी होती थी। पति की परेशानी देखकर श्रीमती सोनी के मन में परिवार की जिम्मेदारी में अपनी सहभागिता निभाने की ठानी। श्रीमती सोनी को आजीविका मिशन के महिला स्व-सहायता समूह द्वारा महिलाओं को आर्थिक स्वावलंबन तथा जीविकोपार्जन हेतु स्वरोजगार करने की सहायता की जानकारी प्राप्त हुई। श्रीमती नीतू सोनी गांव के ही 10 महिलाओं को जोड़कर सरस्वती स्व-सहायता समूह का गठन किया और साप्ताहिक अल्प बचत कर समूह को सशक्त करते हुए बुक कीपर का कार्य करना प्रारंभ किया और सतत लगन से किये गए कार्य को इस स्तर पर पहुंचाया कि जमुडी के ग्राम समूह द्वारा उन्हें 20 हजार रूपये का ऋण प्राप्त हुआ जिससे उन्होंने अपनी पति को सेटरिंग कार्य से जोड़ा और धीरे-धीरे उनकी और उनके पति की आमदनी बढ गई। आजीविका मिशन से उनके पति को मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत बैंक द्वारा 1 लाख रूपये का बैंक ऋण भी मुहैया कराया गया जिससे वे अपनी आजीविका साधन में और अधिक दक्षता के साथ भवन निर्माण का कार्य भी करने लगें। नीतू सोनी द्वारा सिलाई कढाई का भी कार्य ग्राम में महिला स्व-सहायता समूह द्वारा कराया जाने लगा और स्कूलों के गणवेष, निर्माण का कार्य भी किया साथ ही उनके प्रेरणा से समूह की बत्तूबाई द्वारा कृषि कार्य के साथ बकरी पालन, विमला कृषि कार्य के साथ सिलाई, भैंस पालन के साथ दूध उत्पादन, उर्मिला द्वारा ईंट निर्माण आदि का कार्य किया गया और उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया। श्रीमती नीतू सोनी गांव में महिला स्वावलंबन की मिशाल बन गई है और उन्होंने स्वय का एक मसाला उत्पादन यूनिट भी प्रारंभ किया है तथा मसाले की अच्छी पैंकिंग कर स्थानीय बाजार में विक्रय भी कर रही है। आज कुछ कर गुजरने की तम्ना के साथ कड़ी मेहनत को अमलीजामा पहनाते हुए श्रीमती नीतू सोनी द्वारा 15 से 20 हजार रूपये प्रतिमाह आमदनी की जा रही है। श्रीमती नीतू सोनी ने अपने कमाए पैसे से एक जमीन का प्लाट और वाहन भी क्रय कर लिया हैं। श्रीमती नीतू सोनी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, जिला प्रशासन को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा है कि शासन की योजना का क्रियान्वयन व पात्र हितग्राहियों को समय पर उपलब्ध होने से आज आजीविका मिशन की महिला स्व-सहायता समूह के सदस्य आर्थिक स्वावंलबन की राह में लगातार बढ़ रहे है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा निकाली गई विशाल तिरंगा यात्रा जिसका प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ने किया स्वागत

(आधुनिक समाचार सेव)
दिनेश यादव मैहर

मैहर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मैहर द्वारा स्वाधीनता के 75 वें वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा विशाल तिरंगा यात्रा का भव्य आयोजन किया जिसमें भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीकान्त चतुर्वेदी जी ने विशाल तिरंगा यात्रा का अलाउद्दीन तिराहा पर पुष्प वर्षा कर ऐतिहासिक स्वागत किया

ब्लॉक कांग्रेस ब्योहारी के घर चलो अभियान में दिखी एकजूटता

(आधुनिक समाचार सेव)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

ब्योहारी । मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी भोपाल के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी शहडोल के आवाहन पर एवं संगठन प्रभारी राजेंद्र मिश्रा के मार्गदर्शन में ब्लाक कांग्रेस कमेटी

ब्योहारी द्वारा आज 26वें दिन गुरुवार को घर चलो घर घर चलो अभियान ब्योहारी नगर के वार्ड क्रमांक 10 11 12 में अभियान चलाया गया एवं वार्ड वासियों से डोर टू डोर जनसंपर्क कर कांग्रेस पार्टी की रिती निती को जन जन तक पहुंचाया गया एवं भाजपा कुशासन के खिलाफ सशक्त लड़ाई अगर कोई लड़ रहा है तो वो कांग्रेस पार्टी है जो हर स्तर पर आमजन मानस की आवाज को बुलंद करने का कार्य कर रही भाजपा की कुनिति से हर तरफ आम जनता में आक्रोश देखने को मिल रहा है किसान युवा व्यापारी मजदूर हर वर्ग भाजपा के कुशासन से मुक्ति चाहता है अभियान का नेतृत्व कर रहे ब्लाक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी के अध्यक्ष विनोद ताम्रकार ने जनता से संवाद कर बताया कि कांग्रेस पार्टी इस घर चलो घर घर चलो अभियान की मुहीम के माध्यम से निचले स्तर तक फैले भाजपा कुशासन को उजागर कर जनता के हक दिलाने का कार्य इस मुहीम के माध्यम से कर रही है अभियान के दौरान कांग्रेस पार्टी द्वारा चालाए जा रहे सदस्यता अभियान के अंतर्गत घर घर जाकर वार्ड वासियों को सदस्यता ग्रहण करवाई गई व कमलनाथ के आदेशानुसार हर बूथ पर एक महिला व एक पुरूष को डिजिटल सदस्यता दिलाई गई एवं भाजपा कुशासन को जन जन तक पहुंचाया गया अभियान के दौरान मुख्य रूप से यह रहें उपस्थित संगठन महामंत्री हरिशंकर कोरी नगर युवा कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पेंद्र पटेल युवा कांग्रेस महासचिव सतेन्द्र त्रिपाठी पिंटू पूर्व पार्षद गीता कोल बिहारी कोरी कमला कोरी युवा कांग्रेस महामंत्री विक्रम सिंह बघेल आईटीसेल कांग्रेस अध्यक्ष आयुष ताम्रकार रामबाई कोल रूमा कोल सुमित्री कोल ललिता कोल क्रांति कोल सहित सैकड़ों कार्यकर्ता व वार्ड वासी उपास्थित रहे

उद्योग व्यापार मंडल द्वारा 16 मार्च को साँस्कृतिक समारोह

(आधुनिक समाचार सेव)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल द्वारा एक बैठक का आयोजन सेक्टर 63 में सुनील गुप्ता जी अध्यक्ष की अध्यक्षता मे की गई। जिसमे उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल द्वारा अगामी 16-03-2022 को आयोजित किये जाने वाले व्यंग व हास्य समारोहो के बारे मे चर्चा कर रूपरेखा तैयार की गई। जिसमे समारोह स्थल - सेंट्रल मार्केट सेक्टर 41 मे साय 05 बजे से 7 बजे तक किया जायेगा। इस समारोह मे अपने जन प्रतिनिधियों, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर के सभी राजनैतिक दलों के नोएडा महानगर अध्यक्षों को, सभी सरकारी विभाग के अधिकारियों को, महानगर के सभी उद्योगिक व व्यापारियों को, एवं सभी सामाजिक संगठनो को आमंत्रित किया जायेगा। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सभी साथियों की सहभागिता प्रार्थनीय है। इस बैठक मे महामंत्री सुधीर पोरवाल , वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल, उपाध्यक्ष मनोज गुप्ता कोषध्यक्ष रमाकांत गर्ग मौजूद रहे।

दिल्ली की आइपी यूनिवर्सिटी में आवेदन प्रक्रिया शुरू

नई दिल्ली। गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (आइपी यूनिवर्सिटी) में छह नए प्रोग्राम के साथ नए सत्र के लिए दाखिला प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसमें मास्टर इन इंडस्ट्रीयल डिजाइन, मास्टर इन इंटीरियर डिजाइन, बैचलर इन इंडस्ट्रीयल डिजाइन, बैचलर इन इंटीरियर डिजाइन, बैचलर इन इंटरेक्शन डिजाइन व बौद्धिक अक्षमता पर आधारित सनतकोत्तर कोर्स शामिल है। बैचलर इन डिजाइन कोर्स में लेटरल एंट्री का भी विकल्प उपलब्ध है। ये सभी कोर्स विश्वविद्यालय के पूर्वी दिल्ली कैंपस में पढ़ाएं जाएंग कुलपति प्रो. महेश वर्मा ने बताया कि पिछले वर्ष की तरह इस बार भी बीटेक, मेडिकल, वकालत, एमबीए, एमसीए, बैचलर इन आर्किटेक्चर, बैचलर इन डिजाइन प्रोग्राम में दाखिले राष्ट्रीय स्तरीय परीक्षा के आधार पर होंगे। एमबीए, एमसीए और बैचलर इन डिजाइन प्रोग्राम के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अपनी प्रवेश परीक्षा भी आयोजित की जाएगी। 50 शैक्षणिक कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय पिछले सालों की तरह कंप्यूटर आधारित सामान्य प्रवेश परीक्षा का आयोजन दिल्ली एनसीआर समेत देश के आठ विभिन्न शहरों में करेगा। ये सभी प्रवेश परीक्षा 15 मई से 30 मई के बीच आयोजित की जाएगी।नियमित व सप्ताहांत कोर्स में दाखिले के लिए कोई प्रवेश परीक्षा नहीं होगी, बल्कि अंतिम योग्यता परीक्षा के मेरिट के आधार पर दाखिले होंगे। इन कोर्स की जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

नोएडा निवासी अमोघ का पहला ऑफिसियल म्यूजिक वीडियो खुदा लांच किया गया

(आधुनिक समाचार सेव)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। अमोघ बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं और विविध कलाओं में निपुण हैं। खुदा उनका पहला पंजाबी-हिंदी गाना है जिसको पंजाब के नामी चैनल जस रिकाड्र्स वर्ल्डवाइड के द्वारा दुनियाभर में रिलीज किया गया है और गाना यूट्यूब के अलावा सभी ओ टी टी प्लेटफॉर्म्स जैसे-गाना, विंक,स्पोटी फाई,आई ट्यून्स, जिओ सावन और अमेज़न म्यूजिक पर भी उपलब्ध है इस गाने में अमोघ एक्टर और सिंगर दोनो भूमिकाओं में नज़र आएंगे। अमोघ ने अपना पहला गाना चंदा चमके चम चम (मूवी फनाह) ढाई साल की उम्र में 800 लोगों की ऑडियंस के सामने गाया था और और पूरी सभा ने उन्हें स्टैंडिंग ओबेशन दिया था। अमोघ ने शैक्षिक उपलब्धियों के अलावा विभिनन्न सह पाठ्यक्रमों में भी ढेरों पुरस्कार जीते हैं। अमोघ राज्य

स्तरीय बैंडमिंटन खिलाड़ी भी है और अपने स्कूल जेपी पब्लिक स्कूल ग्रेटर नोएडा के लिए कई प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। इस गाने की तैयारी अमोघ और उनके परिवार के लिए किसी प्रोजेक्ट से कम नहीं थी 2 सालो की रिसर्च, घंटों की रिहर्सल और कड़ी मेहनत के बाद आप सब के लिए अमोघ अपना पहला गाना प्रस्तुत कर पाए। इस गाने के म्यूजिक डायरेक्टर- रोक्स ए वीडियो डायरेक्टर रेग डी लिरिसिस्ट-फरमान और फीमेल लीड चार्वी दत्ता इंडस्ट्री के जाने माने नाम हैं। शीघ्र ही अमोघ का अगला गाना रिलीज होने जा रहा है जिसमे अमोघ एक दम नए अवतार में नजर आएंगे और अपनी प्रतिभा को एक नए रूप में प्रतुत करेंगे।

सिंगल नहीं हैं अनन्या पांडे रूमर्ड बॉयफ्रेंड इशान खट्टर को बताया अपना 'फेवरेट'

नई दिल्ली। 'गहराइयां' में अपनी एक्टिंग से तारीफ बटोर रहीं अनन्या पांडे आजकल अपने लव एंगल को लेकर सुर्खियों में छाई हुई हैं। सोशल मीडिया पर अन्नया पांडे और ईशान खट्टर के डेटिंग के चर्चे हैं। पर ये कपल है कि एकदम चुप्पी साधे हुए है। अक्सर ही अन्नया और ईशान एक दूसरे के साथ छुट्टियां मनाते और लंच-डिनर पर साथ जाते स्पॉट होते हैं। ईशान ने अपने भाई शाहिद कपूर की बर्थडे पार्टी में भी अन्नया को इनवाइट किया था। हाल ही में, एक मीडिया इंटरेक्शन के दौरान, जब अन्नया से उनके

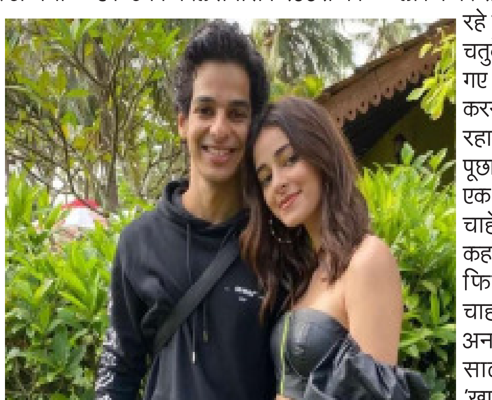

रिलेशनशिप स्टेटस के बारे में पूछा गया, तो एक्ट्रेस ने पहले तो सवाल न सुनने का बहाना किया। फिर ना ना करते हुए भी उन्हें अपने रिलेशनशिप पर बात करनी पड़ी। अन्नया ने कंफर्म किया कि वो अब सिंगल नहीं रही हैं। बॉलीवुड बबल के साथ बातचीत में जहां सोशल मीडिया पर फैंस अन्नया से सवाल पूछ रहे थे, वहीं कई सवालों में से एक उनके रिलेशनशिप स्टेटस को लेकर था। एक फैन ने जानना चाहा कि क्या वह सिंगल हैं। जवाब में, अन्नया ने बहाना किया कि उसने सवाल दोहराए जाने पर भी सुनाई नहीं दिया। अन्नया ने कहा, 'मैं यह सवाल नहीं पा रही।' एक्ट्रेस ने बाद में कहा, 'मैं खुश हूं।' अपने फेवरेट को एक्टक के बारे में पूछे जाने पर अन्नया ने ईशान का नाम लिया। साथ ही ये भी कहा कि, 'लेकिन मेरे सभी को एक्टर्स शानदार रहे हैं, और सिड (सिद्धांत चतुर्वेदी) के साथ मुझे 'खो गए हम कहां' में काम करने का दूसरा मौका मिल रहा है। जब अन्नया से पूछा कि वो किसके साथ एक बार फिर काम करना चाहेंगी, तो अन्नया ने कहा, 'मैं ईशान के साथ फिर से काम करना चाहती हूं। बता दें कि अनन्या और ईशान ने साल 2020 में फिल्म 'खाली पीली' में साथ काम किया था। जिसनें अनन्या ने ईशान के बचपन का प्यार पूजा का रोल प्ले किया था। दोनों बिछड़ने के बाद फिर कई साल बाद फिर मिलते हैं। फिल्म कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई थी पर इन दिनों की जोड़ी के काफी चर्चे रहे।

अमिताभ बच्चन ने सिखाया 'फुटबॉल' के साथ असल जिंदगी का खेल, एक बार फिर पर्दे पर छाए सैराट के डायरेक्टर

मुंबई। जिंदगी को संवारने के लिए सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। फिल्म के आखिर में एक दृश्य है जिसमें हवाई जहाज उड़ान भर रहा होता है और नीचे एयरपोर्ट की बाहरी दीवार पर लिखा है इस दीवार को लांघना सख्त मना है। दीवार के उस पार घनी झुग्गी झोपड़ी बसी होती है। नागराज पोपटराव मंजुले ने झुंड ने जरिए सांकेतिक रूप से झुग्गी झोपड़ी के उन वंचितों की आवाज को उठाया है जिन्हें समाज द्वारा थोपी गई बेडियों को तोड़ने और आसमान में ऊंची उड़ान भरने का बमुश्किल मौका मिलता है। यह फिल्म स्पोर्ट्स कोच विजय बरसे की जिंदगानी से प्रेरित है जिन्होंने 'स्लम सॉकर' एनजीओ की स्थापना की हैं। इस एनजीओ के जरिए विजय ने झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों में फुटबॉल को लोकप्रिय बनाकर उनकी जिंदगी को संवारा है। कहानी का आरंभ झोपड़ पट्टी में रहने वाले युवाओं की गतिविधियों से होता है। यह झुंड में बाइक पर निकलते हैं और रास्ते में महिलाओं के गले की चेन, राहगीरों के मोबाइल पर हाथ साफ करते हैं। मालगाड़ी से कोयला चुराते हैं। इनमें कोई कूड़ा बीनता है या गांजा भी बेचता है। कुछ को नशे की भी लत होती है। हालांकि पढ़ाई-लिखाई के नाम कोई भी पांचवीं से ज्यादा शिक्षित नहीं है पर हेयर स्टाइल फिल्मी हीरो से कम नहीं है। इस झुंड का नायक डॉन उर्फ अंकुश मसरान (अंकुश गेदम) है जिसका पिता

शराबी है और मां घरों में काम करती है। एक बार स्कूल के पिछले गेट से निकलते समय बारिश में स्पोर्ट्स कोच विजय बोराड़े (अमिताभ बच्चन) झुग्गी झोपड़ी के झुंड को प्लास्टिक के डिब्बे से फुटबाल खेलते देखते हैं। विजय का रिटायरमेंट करीब होता है। वह इन बच्चों को प्रतिदिन आधा घंटा फुटबाल खेलने के बदले पांच सौ रुपये देने का ऑफर देते हैं। पैसों के लालच में वे खेलने को राजी हो जाते हैं। फुटबाल खेलने की लत लगाने के पीछे विजय के नेक इरादे होते है। खेल से जुड़ने के बाद किस प्रकार इन बच्चों में बदलाव आता है विजय को अपने मकसद में कामयाब होने के लिए किस प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। डॉन का अतीत किस प्रकार से उसके खेल करियर में बाधक बनता है कहानी इन प्रसंगों के साथ आगे बढ़ती है। चार मार्च (शुक्रवार) को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली झुंड की कहानी, स्क्रिन प्ले, डायलॉग और निर्देशन नागराज पोपटराव मंजुले का हैं। उन्होंने फिल्म में अभिनय भी किया है। मंजुले ने इससे पहले वर्ष 2016 में रिलीज ऑनर किलिंग मुद्दे पर आधारित मराठी फिल्म सैराट का निर्देशन किया था। सैराट की तरह झुंड भी उनकी शानदार कृति है। झोपड़ पट्टी में रहने वाले लोगों की जिंदगी, उनकी मुश्किलें, सपनों, समस्याओं और उनके प्रति बाहरी दुनिया को सोच को नागराज ने बहुत गहराई से दर्शाया है। इंटरवल से पहले फिल्म सधे तरीके से आगे बढ़ती है। झोपड़ पट्टी और कॉलेज के बच्चों के बीच स्क्रीन पर फुटबॉल मैच देखते हुए ऐसा लगता है कि वास्तव में मैच चल रहा है। हार-जीत को लेकर दर्शकों में व्यग्रता रहती है। दर्शक वर्ग में मौजूद झोपड़पट्टी के लोगों की प्रतिक्रियाओं को बेहद रोचक तरीके से चित्रित किया है। इसी तरह एयरपोर्ट पर डॉन के सिक्योरिटी चेक का सीन बिना डायलॉगबाजी के बहुत कुछ कह जाता है। अजय अतुल द्वारा संगीतबद्ध गाना आया ये झुंड है कर्णप्रिय हैं। विजय बोराड़े की भूमिका को अमिताभ बच्चन ने चुस्ती के साथ निभाया है। उनके सभी उम्र के प्रशंसक यह फिल्म पसंद करेंगे। फिल्म के ज्यादातर कलाकार नवोदित और झुग्गी झोपड़ी से ही है और सभी का काम उल्लेखनीय है। स्क्रीन पर वह कहीं से ही बनावटी नहीं लगते हैं। डॉन की भूमिका में अंकुश गेदम ने किरदार की मनोदशा, खेल के प्रति लगाव और तकलीफों को समुचित तरीके से आत्मसात किया है। 'सैराट' फेम आकाश तोषर और रिंकू राजगुरू भी कहानी का हिस्सा हैं। आकाश खलनायक के तौर पर जंचे हैं। यह फिल्म कड़वी वास्तविकता को दर्शाते हुए कहीं हंसाती है तो कहीं झकझोरती भी है। लंबी अवधि के बावजूद आप कहानी साथ बंधे रहते हैं। फिल्म के एक दृश्य में अमिताभ बच्चन का किरदार कहता है कि स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी की दीवारों के उस पार भी एक बहुत बड़ा भारत रहता है जिसके बारे में हमें सोचना होगा। संदेश स्पष्ट है कि अगर दिशाहीन बच्चों को सही मार्गदर्शन मिल जाए तो उनकी जिंदगी भी संवर सकती हैं और वे मुख्यधारा का हिस्सा बन सकते हैं।

शाह रुख खान से फैन ने पूछा, 'पढ़ाई कैसे करूं अच्छे से मन नहीं लगता' किंग खान ने दिया ये मजेदार जवाब

नई दिल्ली। बॉलीवुड के सुपरस्टार शाह रुख खान की फिल्म पठान का दर्शक काफी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। बुधवार को किंग खान ने फिल्म की रिलीज डेट का एलान किया तो फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इसके

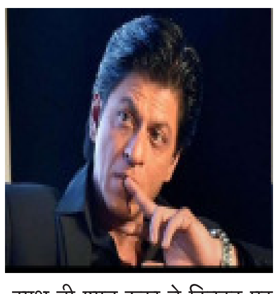

साथ ही शाह रुख ने ट्विटर पर 'आस्क मी एनीथिंग' सेशन रखा और यूजर्स के सवालों के मजेदार जवाब दिए। किसी ने आमिर को लेकर सवाल किया तो किसी ने अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर। सुपरस्टार सभी का दिलचस्प जवाब देते नजर आए। शाह रुख जब भी आते हैं अपने जवाबों से फैंस को लाजवाब कर देते हैं। इस बार भी ट्विटर पर आस्क मी सेशन में शाह रुख ने काफी इटरेस्टिंग जवाब दिया। एक फैन ने जानना चाहा कि जब पढ़ाई में मन ना लगे तो क्या करें, सुपरस्टार होने के नाते वो कोई समाधान दें। ट्विटर यूजर ने लिखा, ठसर पढ़ाई कैसे करूं, अच्छे से मन नहीं लगताठ। इसपर शाह रुख खान ने काफी मजाकिया अंदाज में जवाब दिया, 'दिमाग ट्राई कर शायद काम करेगा मन प्यार के लिए रख। एक फैन ने शाहरुख खान से आमिर खान की फिल्म लाल सिंह चड्ढा को लेकर सवाल किया गया। फैन ने पूछा कि लाल सिंह चड्ढा देखी क्या तो एक्टर ने जवाब दिया, अरे यार आमिर कहता है कि पहले पठान दिखा। बता दें कि पिछले काफी समय से शाह रुख सोशल मीडिया पर एक्टिव नहीं थे। उन्होंने अभी हाल ही में वापसी की है। फैंस इससे काफी खुश हैं। फिल्म पठान की रिलीड डेट का एलान करते हुए शाह रुख ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया। इस क्लिप में शाह रुख दिखाई दे रहे हैं, लेकिन उनका लुक सामने नहीं आया है। शाह ने कहा, 'मुझे पता है कि देर हो चुकी है लेकिन तारीख याद है. पठान का समय अब शुरू होता है 25 जनवरी, 2023 को सिनेमाघरों में मिलते है। हिंदी, तमिल और तेलुगु में रिलीज हो रही है। के साथ पठान का जशन केवल अपने नजदीकी बड़े पर्दे पर मनाएं।'

'गदर 2' में फिर दिखेगा 'तारा सिंह' का म्यूजिक धमाल, पहली फिल्म के ये दो गाने होंगे सीक्वल में शामिल

नई दिल्ली। बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता सनी देओल और अभिनेत्री अमीषा पटेल इन दिनों अपनी फिल्म गदर 2 को लेकर सुखिन्यो में हैं। उनकी यह फिल्म साल 2001 में आई गदर का सीक्वल है। उस समय यह ब्लॉकबस्टर फिल्म साबित हुई थी। फिल्मी की कहानी से लेकर गानों तक ने दर्शकों के दिलों को खूब जीता था। फिल्म के गाने 'मैं निकला गड्डी लेके' और 'उड़जा काले कावां' काफी हिट साबित हुए थे अब गदर 2 के गानों को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। मेकर्स ने खुलासा किया है कि फिल्म गदर 2 में पिछली फिल्म के कुछ गानों को शामिल किया जाएगा। इस बात की जानकारी अभिनेता सनी देओल और फिल्म के निर्देशक अनिल शर्मा ने दी है। इन दोनों हाल ही में अंग्रेजी वेबसाइट बॉम्बे टाइम्स से बातचीत की। इस दौरान सनी देओल और अनिल शर्मा ने गदर 2 के गानों को लेकर बड़ी बात कही है। सनी देओल ने कहा, 'मैं निकला गड्डी लेके' और 'उड़जा काले कावां' गदर 2 का हिस्सा हो सकते हैं। गदर एक म्यूजिकल फिल्म थी क्योंकि मेरा किरदार तारा सिंह

म्यूजिक पर आधारित था। म्यूजिक को लेकर उसका सेंस नहीं बदल सकता।' वहीं डायरेक्टर अनिल शर्मा ने कहा, 'पहली फिल्म का म्यूजिक उसके दिल की धड़कन थी, इसलिए हम सुनिश्चित कर रह हैं कि दर्शख फिल्म के सीक्वल से निराश होकर घर न जाएं। अनिल शर्मा ने आगे कहा, 'उन्हें इस कहानी को उतना ही करीब से महसूस करना चाहिए जितना उन्होंने पिछली के साथ महसूस किया। हम कभी भी पिछली फिल्म की विरासत को खराब नहीं करना चाहते हैं। इस बार भी तारा सिंह के सफर का अहम हिस्सा म्यूजिक ही रहेगा।' इसके अलावा अनिल शर्मा और सनी देओल में फिल्म गदर के म्यूजिक वीडियो को लेकर और भी ढेर सारी बातें की हैं। आपको बता दें गदर 2 की शूटिंग इन दिनों लखनऊ में चल रही है। फिल्म की शूटिंग के लिए अभिनेता सनी देओल बुधवार को लखनऊ पहुंचे। बताया जा रहा है कि शनिवार से फिल्म की शूटिंग शुरू होगी। फिल्म के निर्देशक अनिल शर्मा पहले ही लखनऊ जा चुके थे। फिल्म में सनी देओल के साथ फिर से मुख्य किरदार में अमीषा पटेल नजर आएंगी। सनी देओल और अमीषा पटेल के फैंस दोबारा से पर्दे पर उन दोनों को साथ देखने के लिए उत्साहित हैं।

आशुतोष राणा के 'शिव तांडव' को फेसबुक ने किया डिलीट, गुस्साए एक्टर ने ट्वीट कर पूछी वजह

नई दिल्ली। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर बॉलीवुड के दिग्गज कलाकार आशुतोष राणा ने 'शिव तांडव' का पाठ कर फैंल को मंत्रमुग्ध कर दिया। भक्ति भाव में डूबे एक्टर ने अपना वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया, जिसे देख भोले के भक्त दीवाने हो गए। लोगों ने

आशुतोष राणा की जमकर तारीफ की, लेकिन अब इसी वीडियो को लेकर हंगामा शुरू हो गया है। हुआ ये कि 'शिव तांडव' वाले इस वीडियो को फेसबुक की मेटा टीम ने डिलीट कर दिया है। इसी को लेकर अब एक्टर ने ट्वीट कर इसकी वजह पूछी है। आशुतोष राणा की फैन फॉलोइंग जबरदस्त है, वो अक्सर सोशल मीडिया पर फैंस के लिए कुछ न कुछ शेयर करते रहते हैं। अपनी शुद्ध हिन्दी और दमदार आवाज के बल पर एक्टर लोगों का दिल जीत लेते हैं। यहां तक कि सोशल मीडिया पर भी आशुतोष अपने फैंस के ज्यादातर सवालों के जवाब खुद देते हैं। हाल ही में उन्होंने शिवरात्रि के मौके पर उन्होंने शिव तांडव स्तोत्र का एक वीडियो शेयर किया। फैंस ने इसपर खूब रिएक्शन भी दिया पर फिर जाने क्या हुआ कि फेसबुक ने एक्टर के इस वीडियो को डिलीट कर दिया। फेसबुक की इस कार्रवाई से नाराज एक्टर ने ट्वीट कर लिखा 'चकित हूं फेसबुक मेटा ने मेरा शिव तांडव वाला वीडियो मेरी फेसबुक टाइम लाइन से हटा दिया है। मेटा इंडिया ने ऐसा क्यों किया मैं नहीं जानता। न उसमें कॉपीराइट का इशू है और ना ही वॉयलेशन का मामला है और ना ही वो एफबी के नियमों के विरुद्ध था'।

यूक्रेन में फंसे छात्रों के लिए महीसा बने सोनू सूद

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच जंग चरम पर हैं। इस दोनों देशों को लेकर दुनिया बंटी हुई भी नजर आ रही हैं। वहीं दूसरी ओर भारत यूक्रेन में पढ़ रहे भारतीय छात्रों को वहां से निकलने में हर

संभव कोशिश कर रहा है। अब यूक्रेन में फंसे छात्रों के लिए बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद ने भी हाथ बढ़ा दिया है। सोनू सूद कोरोना काल में परेशान, गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद करते रहे हैं। उन्हें बहुत से लोग अपना मसीहा भी मानते हैं। ऐसे में सोनू सूद यूक्रेन की सीमा में फंसे छात्रों के लिए महीसा बने हैं। इस बात की जानकारी खुद अभिनेता ने दी है। उन्होंने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर दो ट्वीट किए जिससे साफ जाहिर होता है कि सोनू सूद ने यूक्रेन में फंसे छात्रों की कैसे मदद की है। एक शख्स ने सोनू सूद की मदद से भारत आए छात्रों का वीडियो ट्विटर पर शेयर किया है। शख्स के ट्वीट पर प्रतिक्रिया देरे हुए अभिनेता ने लिखा, 'यह मेरी जॉब है, मुझे खुशी है कि मैं इसको करने के काबिल था। भारत सरकार का बहुत धन्यवाद और सपोर्ट, जय हिंद।' वहीं अपने दूसरे ट्वीट में सोनू सूद ने लिखा, 'यूक्रेन में हमारे छात्रों के लिए मुश्किल वक्त और शायद अब तक का मेरा सबसे मुश्किल काम। सौभाग्य से हम कई छात्रों को सीमा पार करके सुरक्षित क्षेत्र में जाने में मदद करने में सफल रहे। आइए कोशिश करते रहें। उन्हें हमारी जरूरत है। आपकी सहायता के लिए, धन्यवाद रोमानिया, पोलैंड के दूतावास को टैग किया है। सोशल मीडिया पर सोनू सूद का यह ट्वीट तेजी से वायरल हो रहा है। अभिनेता के फैंस उनके ट्वीट को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं।

शादी के पहले ही प्रेग्नेंट हुई थीं फरहान अख्तर की पत्नी अब शिबानी दांडेकर ने किया बेबी बंप के सच का खुलासा

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर पिछले महीने कही शादी के बंधन में बंधे हैं। दोनों ने 19 फरवरी को परिवार और खास दोस्तों की मोजूदगी में शादी की। इनकी शादी काफी चर्चा में रही। फरहान और शिबानी की वैडिंग रिसेप्शन से लेकर हर सेरेमनी की तस्वीरें सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुई थीं। वहीं शादी के दौरान शिबानी और उसके बाद शिबानी की एक तस्वीर को देखकर लोगों ने उनके प्रेगनेंस होने पर कयास लगाना शुरू कर दिया था। वहीं इस तस्वीर के सामने आने के बाद लोगों ने उन्हें ट्रोल तक करना शुरू कर दिया था। अब एक्ट्रेस ने इस बात का जवाब दिया है। एंकर-एक्ट्रेस शिबानी दांडेकर ने अब खुद अपनी प्रेगनेसी की खबरों के दावों को खारिज कर दिया है। शिबानी ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक वीडियो

पोस्ट किया है। इस वीडियो में वह अपने एब्स फ्लॉन्ट करती दिख रही हैं। एक्ट्रेस का ये वीडियो उनके वर्कआउट के बाद का है। इस दौरान शिबानी ने शॉट्स के साथ स्पोर्ट ब्रालेट पहना हुआ है। शिबानी खुद शीशे के सामने अपना वीडियो बनाते दिख रही हैं। इस वीडियो के साथ शिबानी ने लिखा है, 'मैं महिला हूं! मैं गर्भवती नहीं हूं. यह टकीला था।' इस वीडियो के साथ ही शिबानी अपनी प्रेग्नेसी की खबरों पर विराम लगा दिया है। इसके साथ ही उन्होंने हंसने वाले इमोजी भी शेयर की है। आपको बता दें कि शादी में फरहान अख्तर के खास दोस्त ऋतिक रोशन उनके मम्मी-पापा राकेश रोशन और पिंकी रोशन भी शामिल हुए थे। वहीं एक्ट्रेस अमृता अरोड़ा, शिबानी की बड़ी बहन अनुषा दांडेकर, और शिबानी की खास दोस्त रिया चक्रवर्ती, निर्देशक आशुतोष गोवारिकर, रितेश सिधवानी, मोनिका डोगरा, गौरव कपूर, समीर कोचर, मेयांग चांग और जूही चावला सहित कई स्टार्स ने शिरकत की थी।

राखी सावंत ने खुद को 'कार्डी बी' और 'किम कार्दशियन' से बताया बेहतर, भड़के लोगों ने लगाई क्लास

नई दिल्ली। बॉलीवुड की ड्रामा क्वीन राखी सावंत हमारा मनोरंजन करने से कभी नहीं चूकती हैं, वह अक्सर उसी के लिए सुर्खियां बटोरती हैं। वह विवाद पैदा करने और उनके बारे में खुलकर बात करने के लिए भी जानी जाती हैं। हाल ही में वह सोशल मीडिया पर अपने पति रितेश से अलग होने की घोषणा को लेकर चर्चा में थीं। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें राखी खुद को इन दोनों हॉलीवुड स्टार्स से बेहतर बताया। हालांकि राखी के इस वीडियो पर लोग भड़क गए और जमकर उनकी क्लास लगा दी। राखी सावंत ने हाल ही में हॉलीवुड स्टार किम कार्दशियन और कार्डी बी पर कटाक्ष करते हुए देखा गया। सेलिब्रिटी फोटोग्राफर विरल भयानी ने इसका एक वीडियो भी अपलोड किया है। जिसमें राखी सावंत को

यह कहते हुए सुना जा सकता है कि 'तो मैं जाकर ऑस्कर में मैं परफॉर्म करूंगी। चाहे किम कार्दशियन हो या जो भी हो। क्या कार्डी बी, ये कोई नाम है कार्डी बी क्या है राखी सावंत देखा क्या नाम है।उन्होंने वीडिये में आगे कहा, 'कार्डी बी करती क्या है बस ये 'देखो मेरा यह (अपनी कमर को मटकाते हुए) देखो मेरा वो हम तो ये सब कभी नहीं करते हैं। क्या बोलते हो दोस्तों हम करते हैं ये सब।सोशल मीडिया पर ये वीडियो आते ही राखी सावंत ट्रोल होने लग गई। लोगों ने राखी को अपनी तुलना हॉलीवुड स्टार से करने पर काफी खरी खोटी सुनाई। उनमें से एक ने लिखा 'तू क्या करती है बंदरिया कभी गा कर दिखाओ कार्डी बी जैसा। मूर्ख।' दूसरे ने लिखा, 'कार्डी तेरे को जनती भी नहीं है, बेकार का ड्रामा मत करो। कम से कम वह एक ऐसी कलाकार है जो अपने गाने खुद बनाती है। आप क्या करती हैं, रोड पर आ जातीं हैं ड्रामा करने पागल औरत।

निशा रावल ने पति करण मेहरा को लेकर किया बड़ा खुलासा

नई दिल्ली। कंगना रनोट का रियलिटी शो लॉक अप हर दिन किसी न किसी वजह से सुर्खियों में बना हुआ है। उनके इस शो में अब टीवी अभिनेत्री निशा रावल ने अपने एक्स हसबैंड करण मेहरा के बारे में हैरान कर देने वाला खुलासा किया है। उन्होंने कहा कि करण मेहरा का शादी के बाद अफेयर था। निशा रावल के अनुसार यह बात खुद पति ने उन्हें बताई थी। लॉक अप के अंदर निशा रावल ने पति के अफेयर के बारे में पायल रोहतगी को बताया है। निशा रावल ने पायल रोहतगी को बताया कि एक दिन वह करण के साथ बैठी हुई थीं और उन्होंने उनसे शांति से यह पूछा कि क्या उनका कोई अफेयर है इसके बाद निशा रावल ने बताया कि करण मेहरा ने इस बात को स्वीकार किया कि उनका एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर है। अभिनेत्री के अनुसार करण ने यह बात उस समय उन्हें बताई थी जब करण और निशा रावल का 8 महीने का बच्चा था। निशा रावल ने बताया कि करण ने मुझसे कहा थी कि मैं किसी और से प्यार करता हूं और मैं तुमसे भी प्यार करता हूं।' लॉक अप में यह बात कहते हुए निशा रावल रोने लगती हैं और कहती हैं कि उनका पहली बार विश्वास टूटा था। वह उन पर विश्वास नहीं कर सकती हैं।

कंगना रनोट की जेल में शुरू हुआ प्यार का खेल

नई दिल्ली। कंगना रनोट के रियलिटी शो लॉक अप में एक नई लव स्टोरी शुरू हो गई है। कंगना की जेल में बंद शिवम शर्मा ने एक्ट्रेस सारा खान संग अपने प्यार का इजहार किया है। हालांकि सना को इस प्यार पर यकीन नहीं और उन्होंने लगे हाथ शिवम से इस प्यार की वजह भी पूछ डाली। शिवम के जवाब में अपनी मां का कमस भी खा ली और कहा कि ये प्री प्लान नहीं थी ये फिलिंग रियल है और उन्हें सच में सना से मोहब्बत हो गई है। लॉक अप के इस पहले लव बर्ड के बीच सुबह ये बता हुई और शिवम पूरे दिन सारा को अपनी कविताएं सुना कर एम्प्रेस करने की कोशिश करते नजर आए। इस दौरान बीच में तहसीन पूनावाला भी आए, जो शिवम की नकल करने की कोशिश करने लगे। तहसीन बताने लगे कि कैसे जब सारा सामने आतीं हैं तो शिवम की बॉडी लैंग्वेज बदल जाती है। शिवम ने तहसीन से शिकायत की कि सारा को उनके अलावा हर कोई प्यारा लगता है। जिस पर सारा ने कहा कि उन्हें शिवम 'बहुत क्यूट' लगता है। शिवम यहीं नहीं रुके, रात को जब सब सो रहे थे तो शिवम ने कागज के टुकड़ों से एक दिल बनाया जिसके अंदर सारा का नाम लिखा था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।